एलेग्जेंडर द ग्रेट

सिकंदर महान

MACEDONIA
THRACE
BLACK SEA
ARAL SEA
CASPIAN SEA
Pella
Athens
Budrum
Gordium
Tarsus
Issus
PERSIAN EMPIRE
MEDITERRANEAN SEA
Alexandria
Tyre
Damascus
R. Tigris
Ecbatana
Babylon
BABYLONIA
R. Euphrates
Ahwaz
Siwa (Oasis)
EGYPT
ARABIA
SOGDIANA
BACTRIA
R. Murghab
HINDU KUSH
KHYBER PASS
AFGHANISTAN
PARTHIA
DRANGIANA
R. Jhelum
Persepolis
INDIA
R. Indus
CARMANIA
PERSIAN GULF
Patala
Karachi
ARABIAN SEA
ALEXANDER'S CAMPAIGN
ROUTE OF ALEXANDER
ROUTES TAKEN BY HIS GENERALS

सिकंदर द ग्रेट, जो दो हजार साल पहले रहते थे. वे न केवल एक महान सैनिक थे जिन्होंने पूरी दुनिया पर विजय प्राप्त की, वो एक बुद्धिमान और न्यायप्रिय शासक भी थे. यह उनकी कहानी है.

एलेग्जेंडर द ग्रेट

सिकंदर महान

मैसेडोन के सिकंदर का जन्म वर्ष 356 ईसा पूर्व में, आज से कोई दो हजार साल पहले हुआ था. उन्हें "एलेग्जेंडर द ग्रेट" के रूप में जाना जाता है क्योंकि वो दुनिया के महानतम सैनिकों में से एक थे, साथ ही वो एक बुद्धिमान और न्यायप्रिय शासक भी थे.

बचपन में उसके पिता, मैसेडोन के राजा फिलिप ने प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक अरस्तू को सिकंदर का टीचर रखा. अरस्तू की सीखों ने सिकंदर को पूरे जीवन प्रभावित किया.

उन दिनों, जिस देश को अब हम ग्रीस कहते हैं वो कई छोटे राज्यों में विभाजित था. सिकंदर के पिता, राजा फिलिप को एहसास हुआ कि अगर इन राज्यों को एक साथ जोड़ दिया जाए, तो वे काफी मजबूत होंगे और तब वे फारसियों का सामना कर पाएंगे जो उन्हें हमेशा पूर्व से उन्हें धमकी देते थे. ग्रीक राज्यों में से कुछ फिलिप के साथ सहमत थे, लेकिन दूसरों ने इसका विरोध किया. पर सभी के हितों में, फिलिप उनको ज़बरदस्ती साथ लाने में मज़बूर हुए.

इनमें से एक अभियान में, सिकंदर को, अठारह साल की उम्र में, सेना की बायीं कमान का लीडर चुना गया. एक लड़ाई में, सिकंदर ने ग्रीक राज्य थेब्स को हराया. इससे सिकंदर ने अपने व्यक्तिगत साहस और बुद्धिमान नेतृत्व का परिचय दिया.
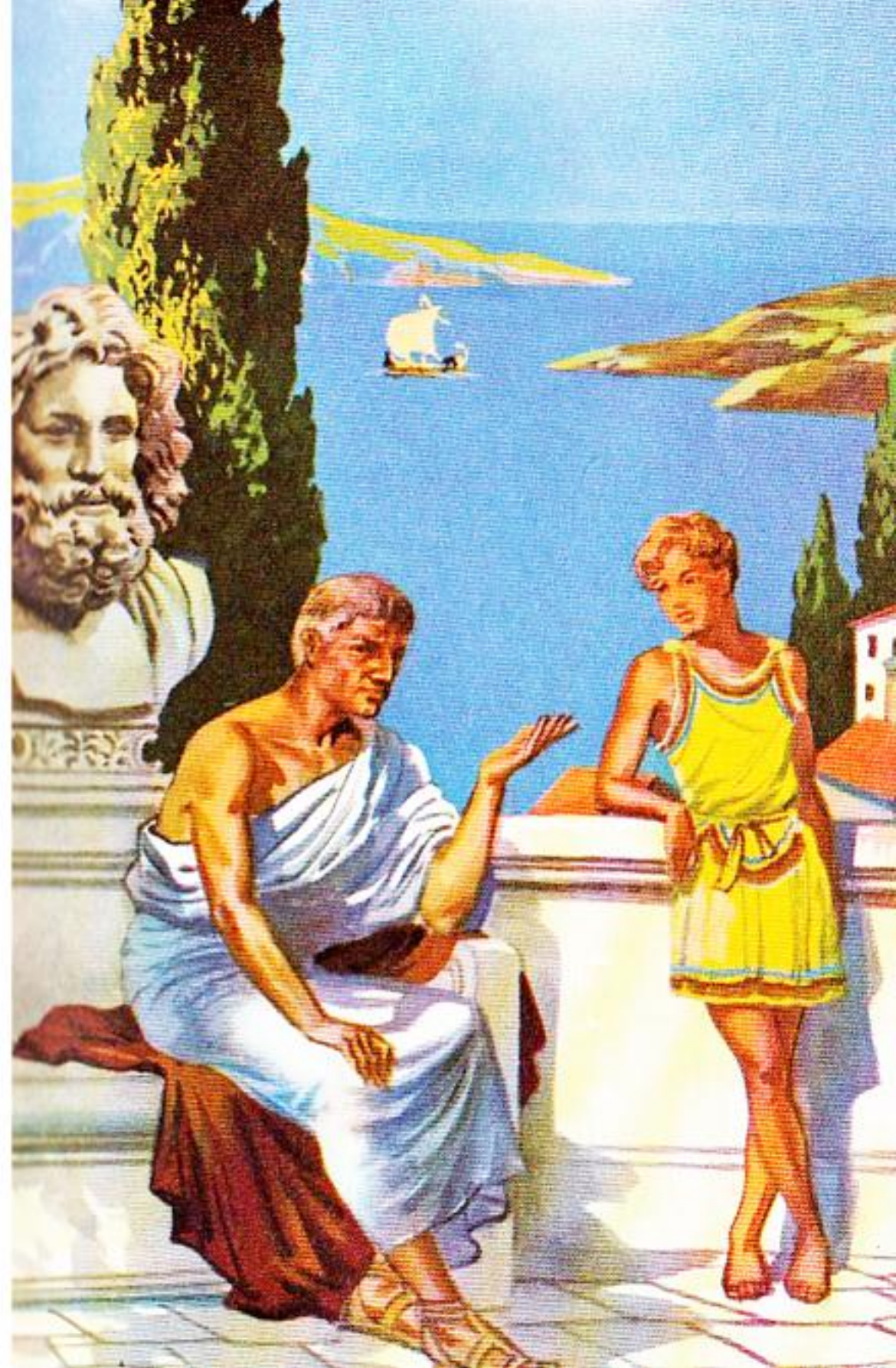
जब सिकंदर बीस वर्ष का था, उसके पिता, राजा फिलिप की हत्या कर दी गई थी. ग्रीक राज्यों, जिन्हें फिलिप ने कुरिन्थ की लीग में मिलाया था, ने तुरंत अलग होने की कोशिश की. उन्होंने सोचा की युवा राजा उन्हें रोकने में बहुत कमजोर होगा. पर वे गलत निकले.

पिता के जनरल एंटीपैटर के समर्थन से, सिकंदर ने खुद मैसेडोन के राजा का ताज पहना, और एक बार फिर से ग्रीक राज्यों का नेतृत्व किया. उसने जैसे ही दक्षिण की ओर कूच किया, तब मैसेडोनियन सेना को देखते ही यूनानियों को उसे पिता के स्थान पर कुरिन्थ लीग का नेता चुन लिया.

इस बीच, मैसेडोनिया के उत्तर में जनजातियों ने, जो अब बुल्गारिया है, ने अपनी उत्तरी सीमाओं को धमकी दी. एक तेज अभियान में सिकंदर ने ट्राइबली की जनजाति पर काबू पाने के लिए डेन्यूब तक मार्च किया. लेकिन जनजातियों ने नदी के पार अपनी महिलाओं और बच्चों को भेजा, और जो लोग लड़ाई से बच गए, वे अब उनके साथ जुड़ गए. अन्य जनजातियों की मदद से उन्होंने सिकंदर को चुनौती दी.

सिकंदर ने अपने आदमियों को पेड़ काटने और उनके तनों से नावें बनाने का आदेश दिया. फिर सिकंदर, 5,000 से अधिक सैनिकों को डेन्यूब नदी पार कराने में कामयाब रहा. उससे उसने आसानी से बाकी जनजातियों को खदेड़ दिया.
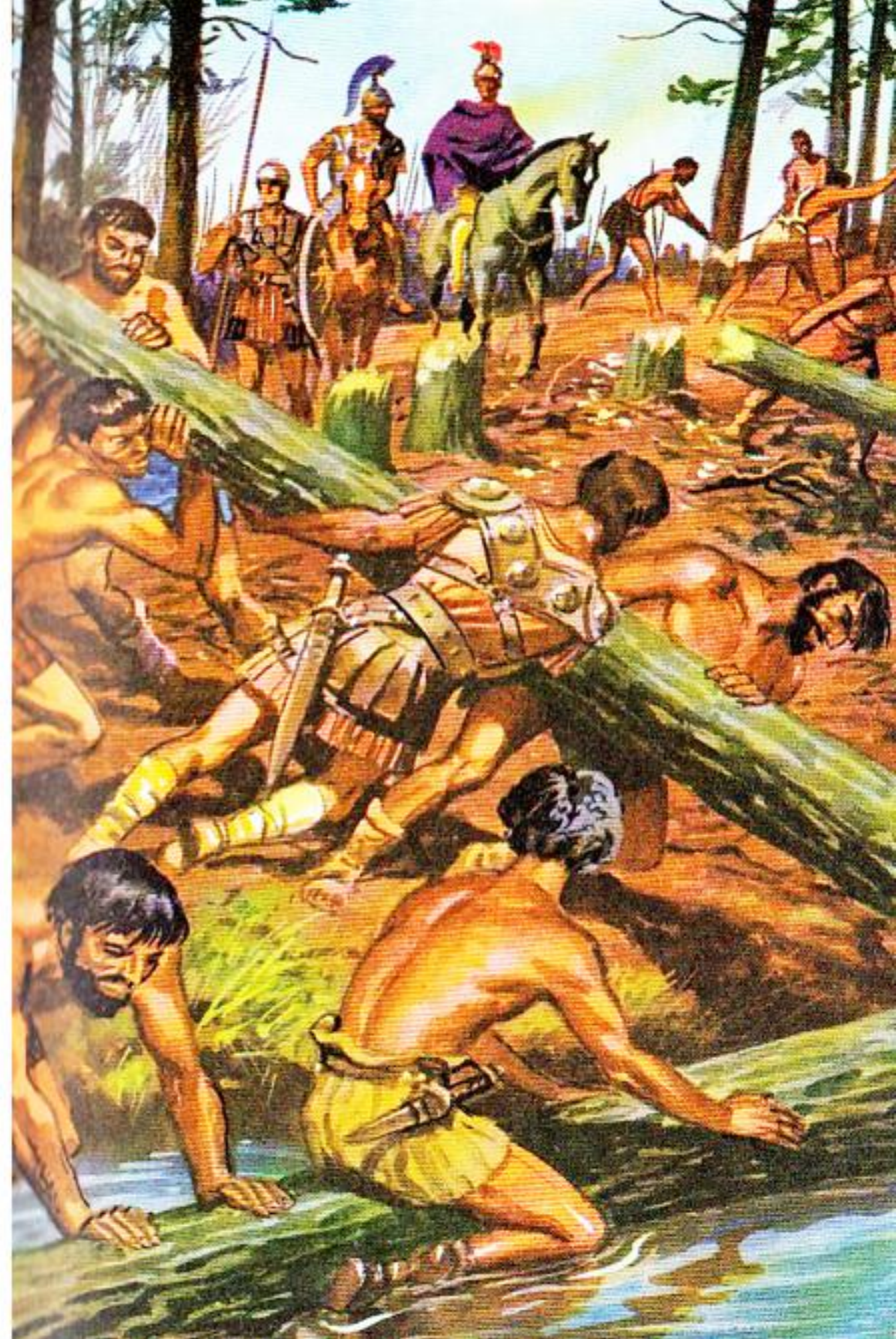
एक अफवाह उड़ी कि सिकंदर को डेन्यूब पर मार दिया गया था. उससे ग्रीक राज्यों ने एक बार फिर से विद्रोह करने का मन बनाया.

सिकंदर ने संकोच नहीं किया. उसने अपनी सेना के साथ फिर से दक्षिण की ओर प्रस्थान किया. रास्ते में उसे पता चला कि फारस के राजा, ग्रीक राज्यों को, हथियारों और धन की आपूर्ति कर रहे थे. चौदह दिनों में वह थेब्स शहर पहुंचा, जहां उसके खिलाफ पहली बार विद्रोह उठा था.

ग्रीक राज्यों, में से एथेंस और स्पार्टा, इंतजार कर रहे थे कि आगे क्या होगा. सिकंदर ने उम्मीद की थी कि थेब्स आत्मसमर्पण करेगा, लेकिन ऐसा न करने पर वो शहर पर हमला करने को तैयार था. थेब्स ने आत्मसमर्पण करने से इनकार किया, और फिर सिकंदर की सेना ने उन्हें निर्णायक रूप से हराया. उसके बाद मेसीडोनियन सैनिकों ने भगोड़ों के साथ शहर में प्रवेश किया.

सिकंदर आमतौर पर उन लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करता था जिन पर उसने विजय प्राप्त की थी. उसने शहर और उसके निवासियों को बख्शा. कोरिंथ के लीग के अन्य सदस्य, जो थेब्स से ईर्ष्या करते थे, उन्होंने सिकंदर के विद्रोहियों को अच्छा सबक सिखाने के लिए राज़ी किया. उसके बाद थेब्स पूरी तरह से नष्ट हो गया, केवल वो मंदिर और घर बचा जिसमें सौ साल पहले प्रसिद्ध ग्रीक कवि पिंडर रहते थे. थेब्स के कुछ लोग एथेंस भाग गए, पर आठ हजार लोगों को दास के रूप में बेचा गया.
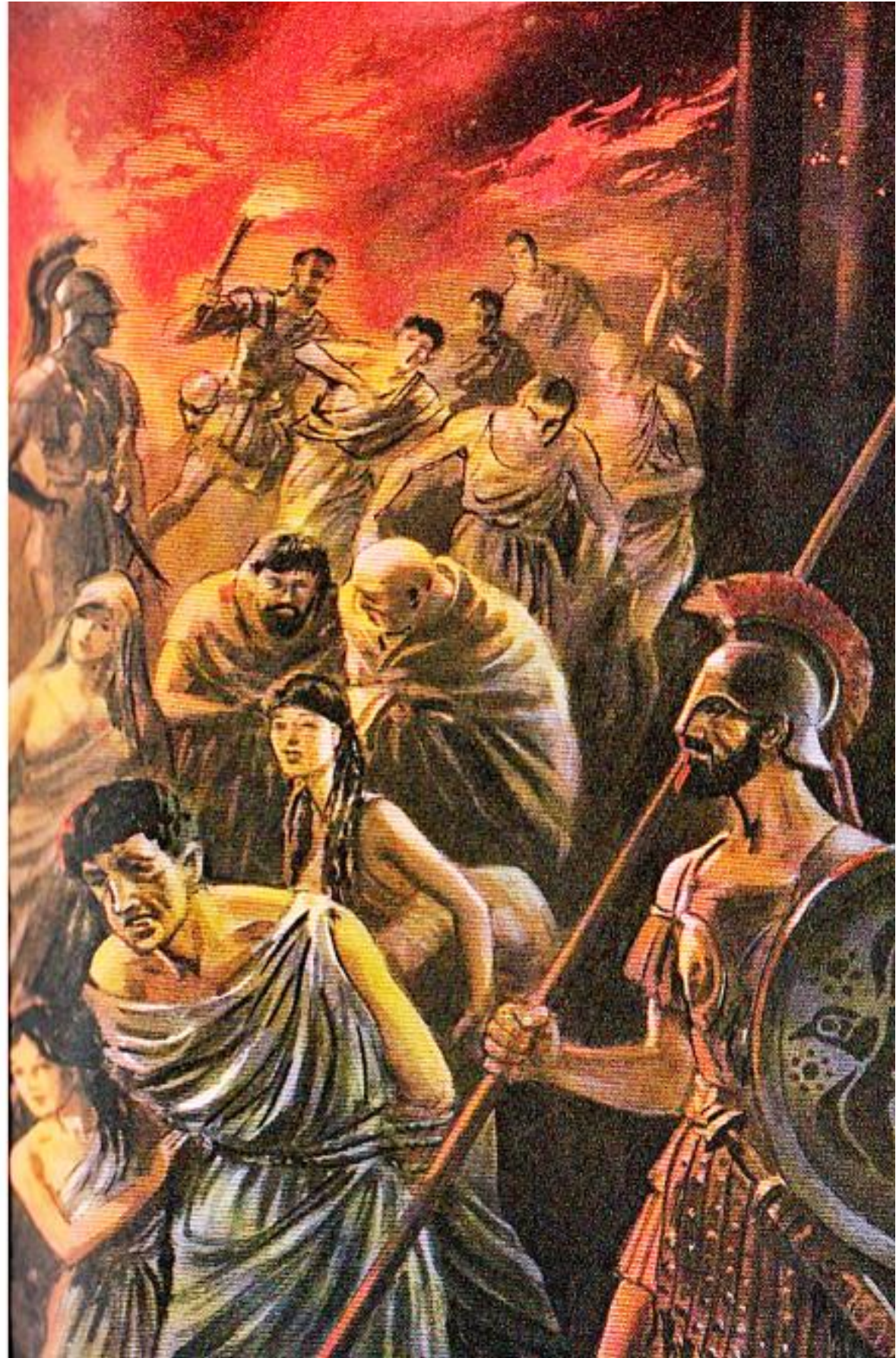
सिकंदर अब यूनानी राज्यों का निर्विवाद नेता था, और उसने अपने पिता की योजना को आगे बढ़ाने के लिए फारस का आक्रमण करने का फैसला किया.

ऐसा करने के उसके दो कारण थे. दारा नाम के फारस के राजा ने उसके खिलाफ ग्रीक राज्यों की मदद की थी, और सिकंदर को पता था कि दारा उस पर हमला करने के लिए सही अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था. दूसरा कारण, डेढ़ सदी पहले का था. 480 ई.पू. में, सिरसेक्स नाम के फारस के एक राजा ने मैसिडोनिया और ग्रीस पर आक्रमण किया था और एथेंस शहर को जला दिया था.

यूनानियों ने बदला लेने की योजना बनाई, और अब सिकंदर यूनानियों और मैसेडोनियन की एक बड़ी सेना की कमान संभाले था. 35,000 सैनिकों के साथ, चौदह फीट लंबे भालों और जहाजों के मस्तूलों से उड़ते झंडों के साथ उसने डारडेल्स को पार किया.

फारस की योजना सिकंदर के सामने, पीछे हटने की थी. हटते समय वे सिकंदर के लिए सभी उपयोगी चीज़ें नष्ट करना चाहते थे. तब तक डारियस उससे लड़ने के लिए एक मजबूत सेना एकत्र कर लेता. जैसे फ़ारसी पीछे हटे, सिकंदर ने आसानी से उनकी छोटी सेनाओं को हरा दिया. फिर हॉलिकार्नासस शहर (नाम बदलकर बड्रम पड़ा) को सफलतापूर्वक घेर लिया गया. इससे सिकंदर को ग्रीस के विपरीत एशिया के तट की कमान सँभालने का मौका मिला.
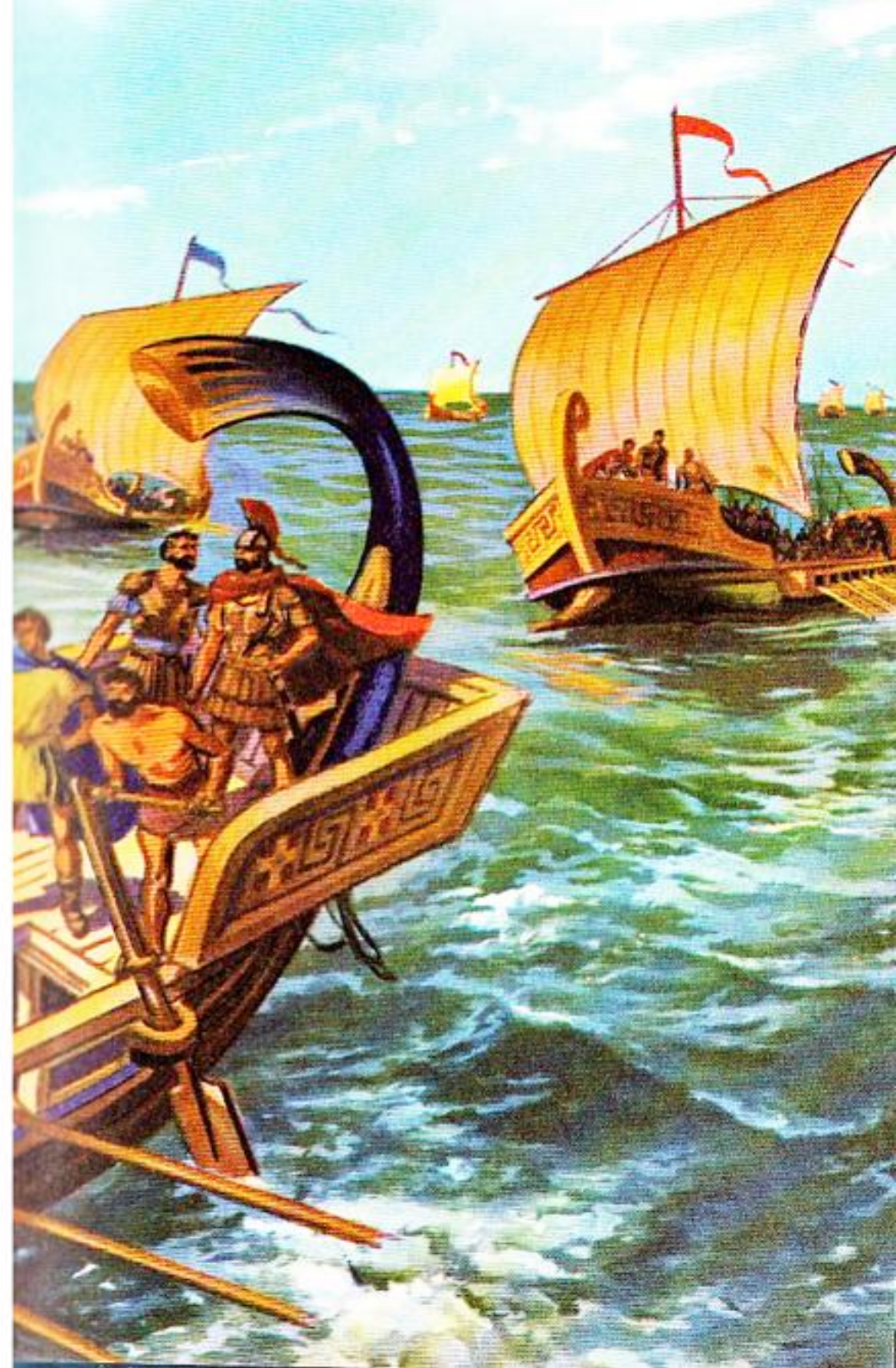
तट से सिकंदर उत्तर की ओर मुड़ गया, अब जो तुर्की है, जो उस समय गॉर्डियम नामक शहर की जनजातियों से लड़ रहा था. यहां सिकंदर ने कुछ ऐसा कहा जिसे आज भी लोग याद करते हैं.

किंवदंती के अनुसार, ग्रीक देवता ज़ीउस ने घोषणा की थी कि जो पहला इंसान गाड़ी में मंदिर तक जाएगा उसे राजा घोषित किया जायेगा. फिर एक दिन जब गॉर्डियस नाम के किसान ने ऐसा किया तो देशवासियों ने उसे ताज पहनाया और उससे गॉर्डियम शहर की स्थापना हुई.

कहानी आगे कहती है कि गॉर्डियस ने गाड़ी के खंभे को जुए से एक बहुत ही जटिल गाँठ में बाँधा था. देव ने घोषणा की, कि जो भी बाद में गाँठ को खोलेगा, वो पूरे एशिया पर राज करेगा.

जब सिकंदर ने शहर पर कब्जा कर लिया तो उसने उस गाड़ी को देखा जिसे मंदिर में रखा गया था. सिकंदर, पूरे एशिया का शासक बनना चाहता था, लेकिन उसने गाँठ को खोलने की कोशिश में अपना समय बर्बाद नहीं किया. अपनी तलवार खींचते हुए, उसने एक झटके से गाँठ को काट डाला. इसीलिए, जब कोई कठिन समस्या का हल निकालता है, तो हम कहते हैं कि उस व्यक्ति ने "गॉर्डियन-गाँठ" को काट दिया.
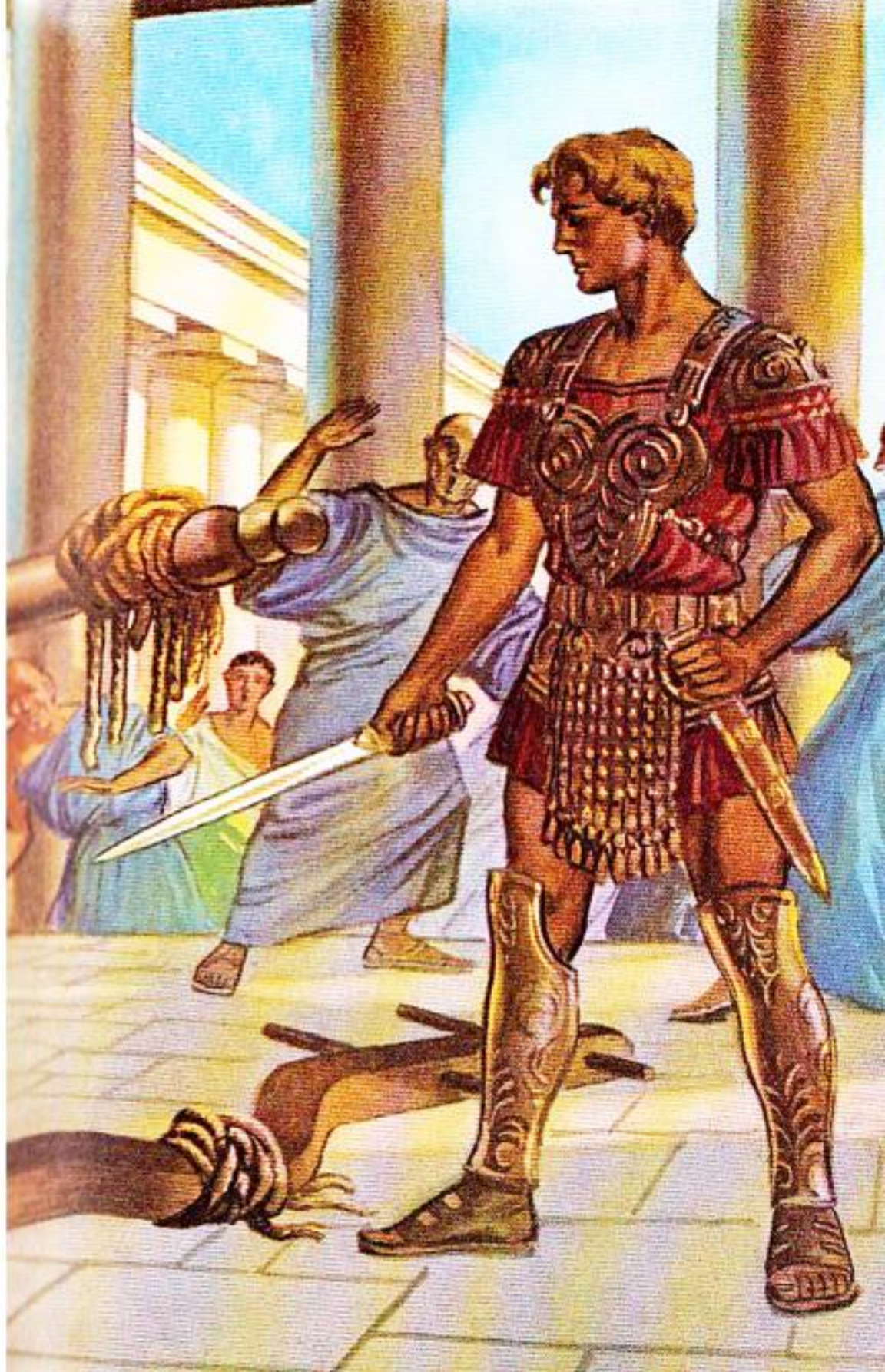
सिकंदर का इरादा छोटी जनजातियों से लड़कर अपनी ताकत बर्बाद करने का नहीं था. वो डारियस की फ़ारसी सेना को नष्ट करना चाहता था. वह फिर से दक्षिण की ओर गया, और यहीं पर एक घटना घटी जो हमें सिकंदर के चरित्र में कुछ गहराई से बताती है.

वह बुखार से बीमार था, और उसके चिकित्सक के रूप में, फिलीप उसे दवा का एक गिलास दे रहा था. तभी उसे एक पत्र मिला जिसमें उसने बताया कि फिलिप को डारियस ने उसे जहर देने के लिए रिश्वत दी थी. सिकंदर ने फिलीप पर भरोसा किया और, अपने विश्वास को दिखाने के लिए, उसने दवा पीते-पीते फिलीप को वो पत्र पढ़ने के लिए दिया.

सिकंदर की ताकत को नष्ट करने के लिए डारियस भी समान रूप से चिंतित था. दोनों सेनायें इस्सुस नामक स्थान पर मिलीं, जो उस तट के पास था जहां आज तुर्की, सीरिया के साथ मिलता है. सिकंदर ने लड़ाई जीत ली और अलेक्जेंड्रिया नामक शहर की स्थापना की, जिसे बाद में अलेक्जेंड्रेता कहा जाने लगा. आज इसे तुर्की के नाम - इस्केंडरन से जाना जाता है.

जब लड़ाई में हार निश्चित दिखाई दी तब डारियस पूर्व की ओर भाग गया. लड़ाई के बाद सिकंदर को पता चला कि डारियस की मां, पत्नी और बेटियों को पकड़ लिया गया था. उसने उनके साथ बड़े सम्मान के साथ व्यवहार करने का आदेश दिया और उनकी हर ज़रुरत को पूरा करने का हुक्म दिया.
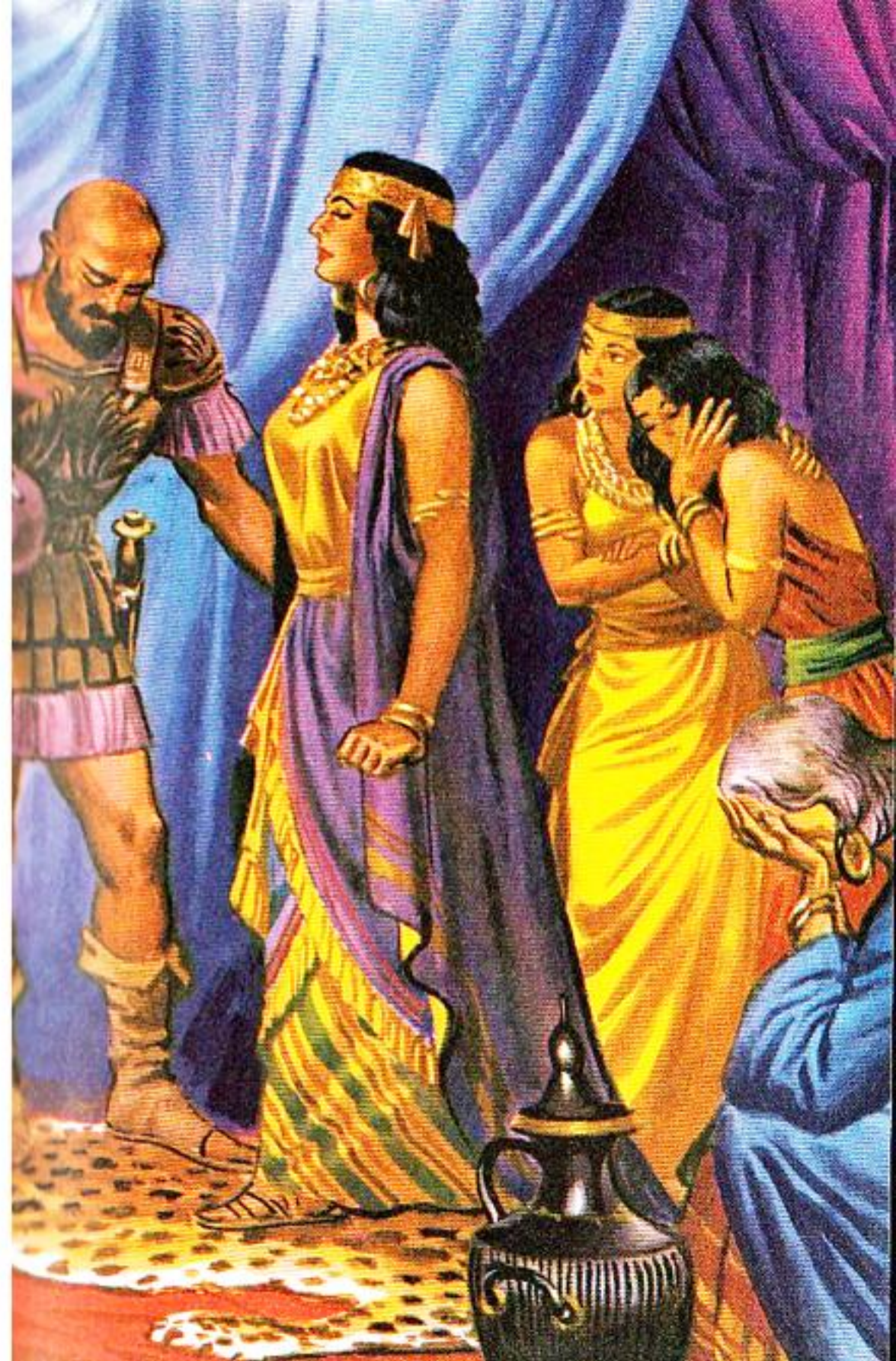
फ़ारसी सेना तितर-बितर हो गई थी, लेकिन डारियस के पास अभी भी भूमध्य सागर में एक बेड़ा था. सिकंदर के पास समुद्र में लड़ने के लिए पर्याप्त जहाज नहीं थे, इसलिए उसने उन सभी बंदरगाहों पर कब्जा करने का फैसला किया जो डारियस के जहाज़ों को सामान की आपूर्ति करते थे. इससे बेड़े को नुकसान पहुंचा और वो शक्तिहीन हो गया.

फिलिस्तीन के सभी तटवर्ती शहरों ने उसके सामने आत्मसमर्पण कर दिया. फिर वो टायर नामक स्थान पर आया. पिछले युद्ध में इस शहर को घेरने में तेरह साल लगे थे, और उसके नागरिकों ने सोचा कि वे इस बारे भी सिकंदर को आराम से हरा सकते थे.

टायर का शहर तट से आधे मील की दूरी पर एक टापू बनाया गया था, इसलिए सिकंदर ने एक निर्माण मार्ग का आदेश दिया जिससे उसके सैनिक वहां पर हमला कर सकें. जहां पानी उथला था, वहां मार्ग बनाना आसान था, लेकिन टायर की दीवारों के पास पानी बहुत गहरा था, और न केवल काम अधिक कठिन था, बल्कि दुश्मन दिन में किया काम रात को नष्ट कर देते थे.

सिकंदर के इंजीनियरों ने भारी तबाही के लिए अस्थायी तैरते राफ्ट का निर्माण किया, और उनकी आड़ में मार्ग को पूरा किया. सात महीने की घेराबंदी के बाद शहर पर हमला करके उसपर कब्जा कर लिया गया. फारस के बेड़े ने सिकंदर को फिर कभी परेशान नहीं किया.
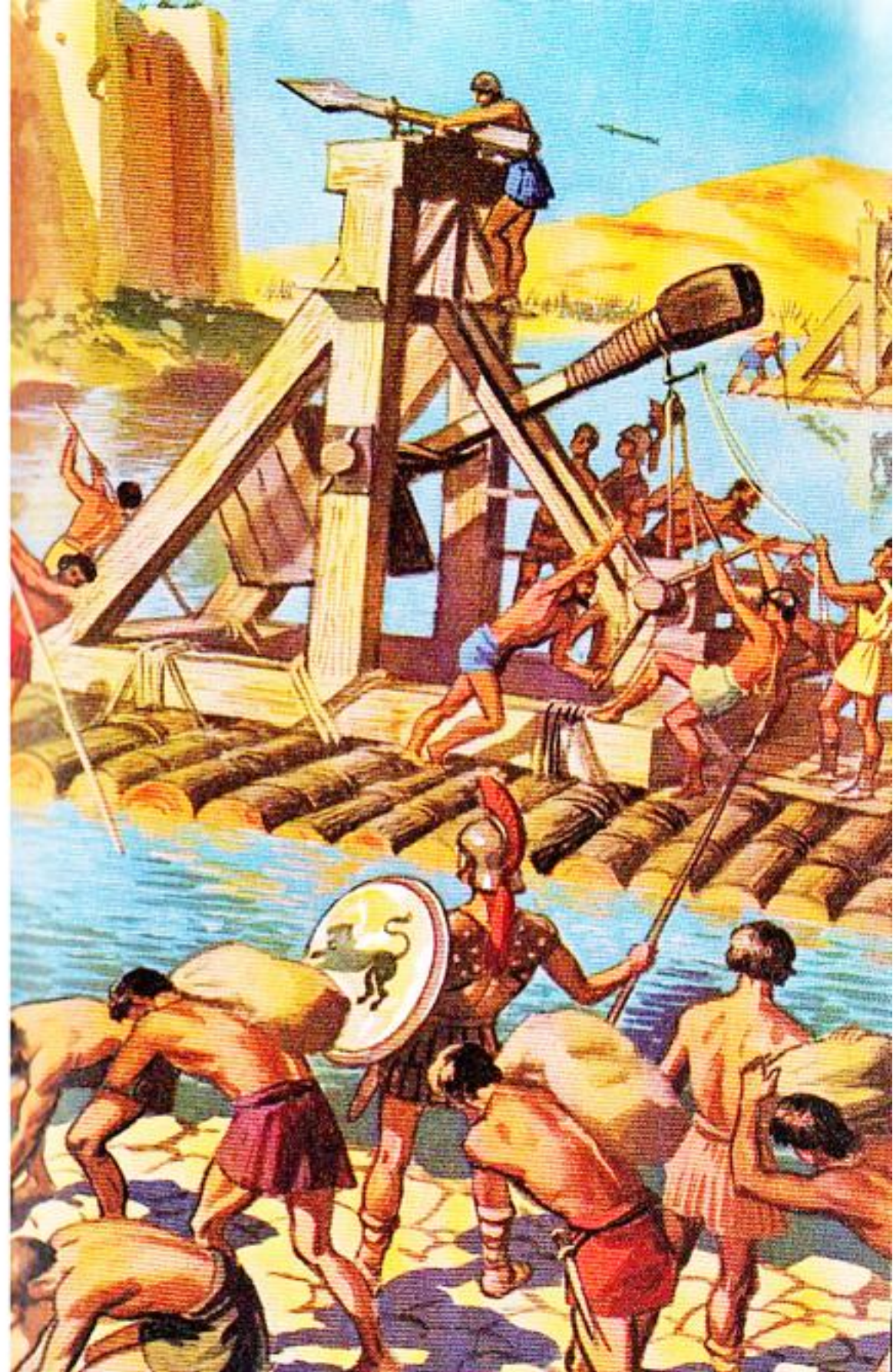
टायर पर कब्जा करने के बाद, सिकंदर भूमध्य सागर के तट की सीध में चलते-चलते हुए मिस्र पहुंचा. वो नील नदी के डेल्टा में जाकर रुका.

सिकंदर एक सफल जनरल से कहीं अधिक था. वो सभी अभियानों पर अपने साथ विज्ञान, कला और व्यापार में कुशल लोगों को लेकर जाता था, और वो उनकी बातें ध्यान से सुनता था. उसे पता था कि हर देश जिस पर वो विजय प्राप्त करेगा वहां उसके व्यापारियों को अधिक व्यापार मिलेगा.

जहां नील नदी समुद्र में प्रवेश करती है, वहां वो कई छोटी नदियों में बँट जाती है. वहां पर सिकंदर ने एक महान बंदरगाह बनाने का फैसला किया जिसमें मिस्र के सभी उत्पादों के लिए जहाज आ-जा सकें. जब बाद में सिकंदर अपनी सेनाओं के साथ सुदूर पूर्व में हजारों मील दूर गया, तो वो अपने पीछे आर्किटेक्ट्स, इंजीनियरों और बिल्डरों को काम पूरा करने के लिए छोड़ गया. वह उस शहर को देखने कभी नहीं लौटा, जिसका उसने कभी सपना देखा था.

आज भी अलेक्जेंड्रिया में उस महान विजेता के लिए एक स्थायी स्मारक बना हुआ है. सदियों पहले स्थापना के बाद वो आज और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है. उस बंदरगाह पर दुनिया भर से जहाज आते हैं जिसका सिकंदर को तब कोई अंदाज़ नहीं था.
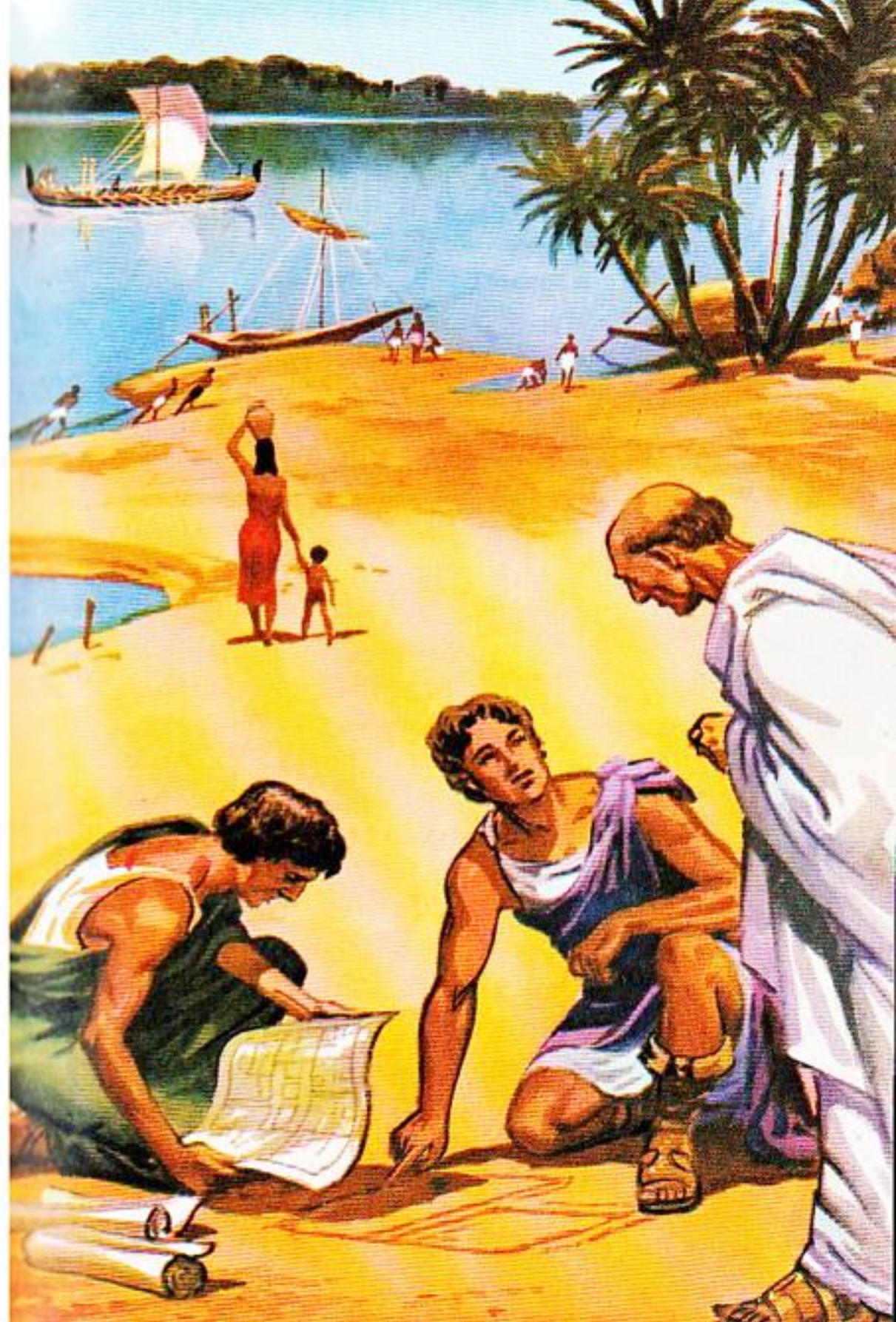
मिस्र के लोगों ने सिकंदर का कोई प्रतिरोध नहीं किया. उन्होंने फारसियों से उसे अपने उद्धारकर्ता के रूप में माना, और मेम्फिस में उसे पूरे मिस्र के फेरो का ताज पहनाया.

उन दिनों लोग किसे महत्वपूर्ण काम को करने से पहले किसी ज्योतिष का परामर्श लेते थे. ये वो स्थान थे जहाँ पुजारियों द्वारा पूछे गए सवालों का उत्तर देवता देते थे. उनमें से सबसे प्रसिद्ध मंदिर डेल्फ़ोस, ग्रीस में था. एक और मिस्र के देव अम्मोन का मंदिर, अलेक्जेंड्रिया से रेगिस्तान में तीन सौ मील की दूरी पर था.

अब इस जगह को सीवा ओएसिस (नखलिस्तान) कहा जाता है. सिकंदर ने वहां जाने का फैसला किया. वो यह सवाल पूछाना चाहता था कि क्या डारियस के खिलाफ उसका अभियान सफल होगा, या नहीं. बेशक रेगिस्तान के पार कोई सड़क नहीं थी, और जो आदमी सिकंदर का मार्गदर्शन कर रहा था, वह रास्ता भटक गया था. अंत में सांपों और पक्षियों का पीछा करते हुए - जो नखलिस्तान लौट रहे थे, सिकंदर आखिर में मंदिर तक पहुंचा और उसने परामर्श किया.

पुजारियों ने सिकंदर को, अम्मोन के बेटे के रूप में माना, क्योंकि मिस्र के फेरो हमेशा देवताओं के कुल से आते थे. सिकंदर ने इस पर विश्वास किया या नहीं, यह हमें नहीं पता. संभव है कि उसने ऐसा किया हो.
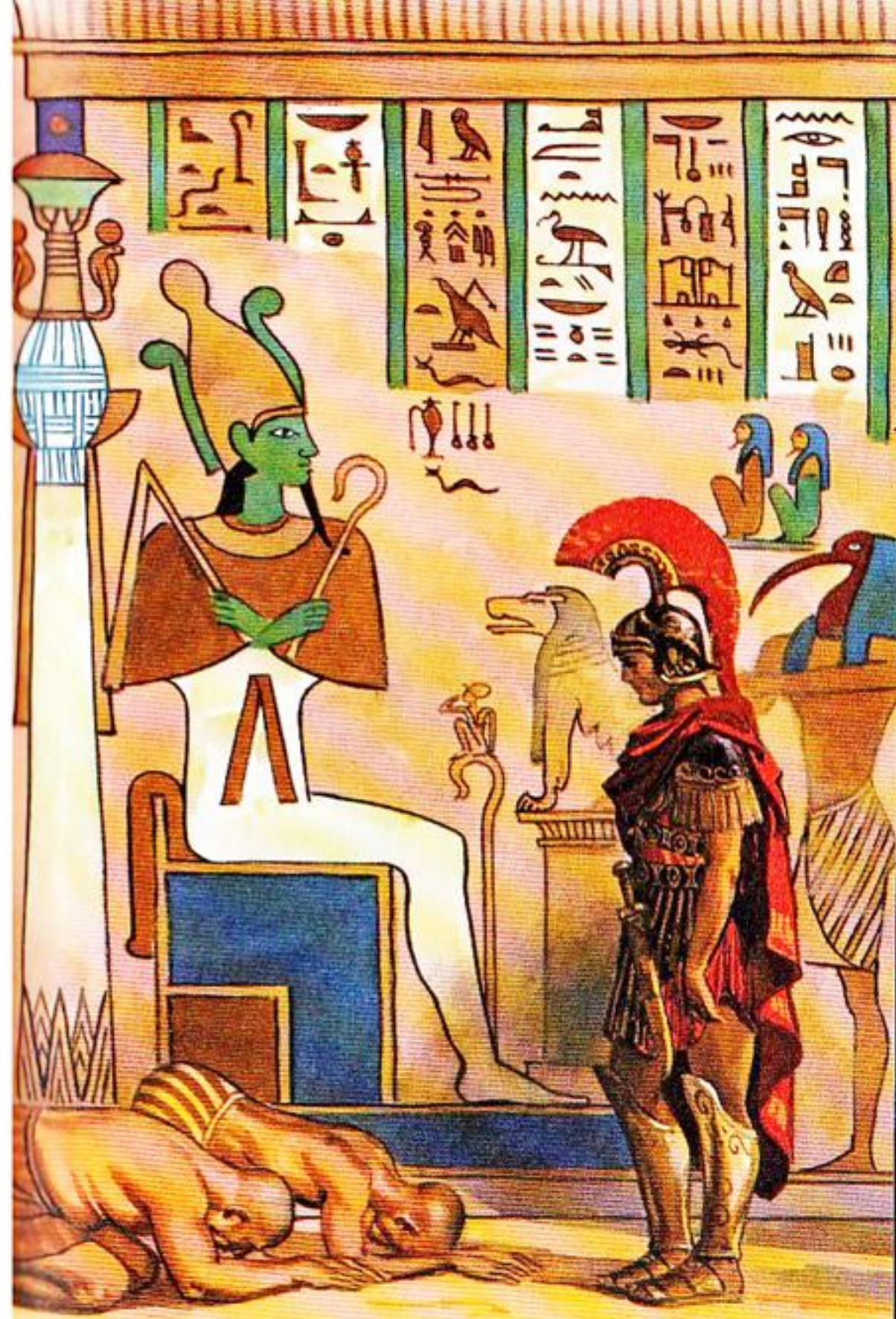
डारियस के पास एक और सांस लेने की जगह थी जहाँ उसने एक और सेना इकट्ठा की. पैदल सैनिकों के खिलाफ इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए, डारियस के पास कई डरावने रथ थे. इन रथों के पहियों से तेज और लम्बे ब्लेड जुड़े थे, और जब पैदल सैनिकों के बीच यह रथ सरपट भागते थे, तो सैनिकों को भयानक घाव लगते थे.

सिकंदर, दमिश्क के रास्ते मिस्र से लौटा, जहां उसने डारियस की एक विशाल धन-राशि पर कब्जा किया. उसने दो महान नदियों, यूफ्रेट्स और टिग्रिस को निर्विरोध पार कर लिया. टिग्रिस के आगे की तरफ, डारियस उसका इंतजार कर रहा था.

वर्ष 331 ईसा पूर्व में, अक्टूबर की सुबह को दोनों सेनाएं आमने-सामने आ गईं. सिकंदर ने यह सुनिश्चित किया था कि उसके सैनिकों को अच्छा भोजन और एक रात की पक्की नींद मिले. फारसियों ने पूरी रात हथियार उठाए थे, इसलिए वे थके और भूखे थे.

लड़ाई शुरू हो गई और डरावने रथों ने हमला किया. लेकिन सिकंदर के भाला सैनिकों ने दौड़ते हुए घोड़ों को मारकर नीचे गिरा दिया. सिकंदर ने अपने घुड़सवारों के साथ हमला किया, जिससे फ़ारसी सैनिकों के पैर टूट गए और वे भाग गए. उसके बाद सिकंदर ने विजय पताका के साथ बेबीलोन में प्रवेश किया.
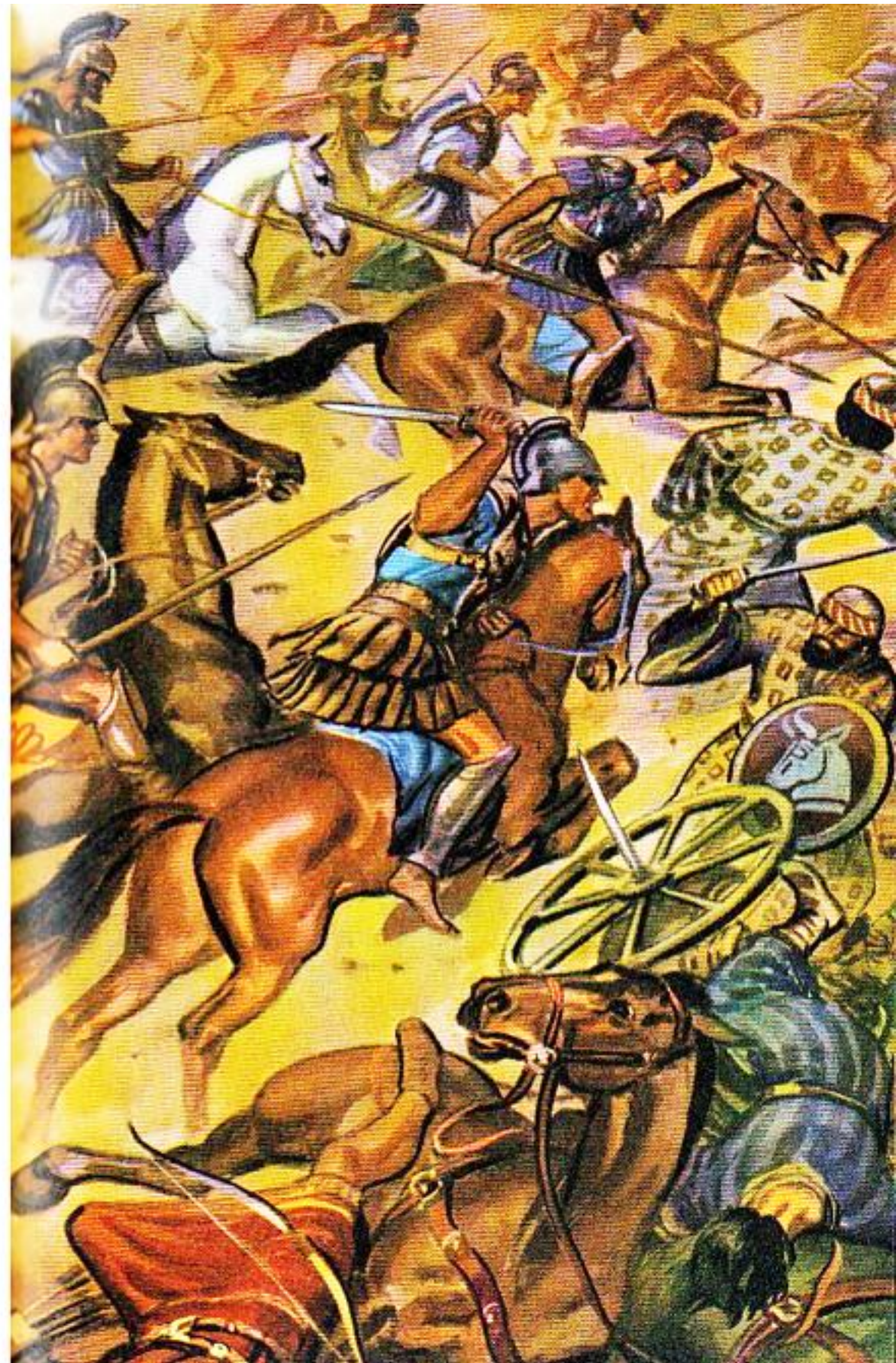
डारियस हमेशा की तरह, अपने सैनिकों को लड़ने-मरने के लिए छोड़कर, युद्ध से भाग गया. इस बार सिकंदर ने उसका पीछा नहीं किया.

बेबीलोन में, सिकंदर ने एक बुद्धिमान विजेता जैसे काम किया. उसने सभी मूल रीति-रिवाजों को बहाल किया और एक फारसी रईस को शहर का राज्यपाल नियुक्त किया. जल्द ही उसकी सेना फिर से फारस की खाड़ी से सौ-मील पूर्व में पर्सेपोलिस की ओर चल दी.

सिकंदर ने अपने सैनिकों को लंबी दूरी तय करने के लिए मजबूर किया. कभी-कभी वे एक दिन में छत्तीस मील तक चलते थे. इसका एक अच्छा कारण था. पर्सेपोलिस में डारियस का एक बड़ा खजाना छिपा था. खजाने को हटाए जाने से पहले सिकंदर वहां पहुंचना चाहता था. वह सफल रहा और उसने सारा सोने पर कब्जा कर लिया. सोना चवालीस मिलियन पाउंड था.

इस बीच डारियस, जल्दबाज़ी में इस्बताना नामक स्थान पर चला गया था. अब वो हमदान का एक आधुनिक शहर है. खजाने पर कब्जा करने के बाद, सिकंदर ने डारियस का दुबारा पीछा करने की सोची. लेकिन एक्बटाना पहुंचने पर उसे पता चला कि डारियस वहां से फिर से भाग गया था. जबरन चलते हुए और अंत में लगभग अकेले, एक रात में पचास मील की दूरी सवारी करते हुए, सिकंदर ने डारियस को पछाड़ दिया. तब उसे यह पता लगा कि डारियस को उसके ही दो अधिकारियों ने मार डाला था.

एक्बटाना में सिकंदर को एक शानदार सोने और चांदी का महल मिला. जब वह पूर्व की सुगंधित विलासिता के बीच में बैठा तो उसे महसूस हुआ कि आखिर वो वह उस सबका मालिक था.

उसके पुराने शिक्षक, अरस्तू ने उसे सिखाया था कि शांति बहाल करना भी उतना ही मुश्किल काम था जितना कि युद्ध करना. सिकंदर, मैसिडोनिया का राजा था, लेकिन विजय पाकर अब वो फारस का राजा भी था. उसका उद्देश्य दोनों राज्यों के दोनों लोगों - यूनानियों और फारसियों को एक-साथ मिलाना था.

शुरुआत में उसने फ़ारसी रईसों के साथ-साथ अपने ग्रीक-मैसेडोनियन जनरलों को शहरों और प्रांतों का गवर्नर नियुक्त किया. उनका दूसरा कदम बेबीलोन को नए साम्राज्य की राजधानी बनाना था, वो साम्राज्य जो भूमध्य सागर से कैस्पियन समुद्र तक फैला हुआ था, और जल्द ही और आगे तक फैलने वाला था.

यह उसके ग्रीक और मैसेडोनियन अनुयायियों को गवारा नहीं हुआ. और जब सिकंदर ने अपना ग्रीक अंगरखा छोड़कर फारसियों के बहते वस्त्र पहने तो उसके लोग बहुत नाखुश हुए. उसने खुद को "लॉर्ड ऑफ एशिया" का नया टाइटल दिया. उसने टकसाल में नए सिक्के ढलवाये, जो आज भी म्यूज़ियम में देखे जा सकते हैं. उन पर फारस का शाही शेर - ग्रीफॉन छपा हुआ है. उस समय सिकंदर केवल सत्ताईस साल का था.
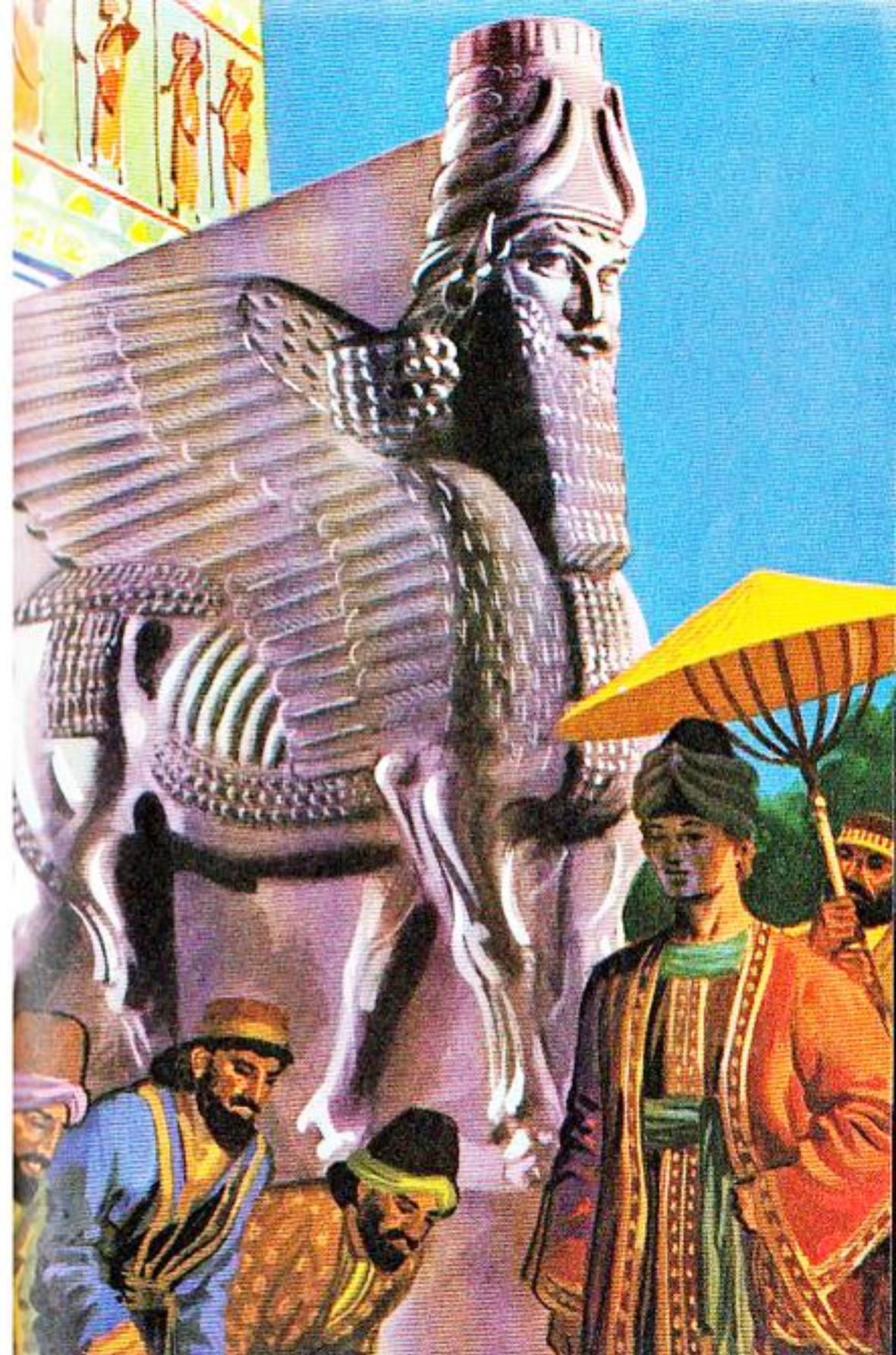
सिकंदर अब पूर्व की ओर मार्च करने को तैयार था. फारसी साम्राज्य कितना फैला था यह वो नहीं जानता था, लेकिन वो उस पर विजय प्राप्त करने के लिए दृढ़ था.

जब वो मुरगब नदी तक पहुंचा तब उसे पता चला कि दक्षिण में जनजाति, जो अब अफगानिस्तान में थीं उसके खिलाफ हथियार उठाने की बात सोच रही थीं. सिकंदर जानता था कि अपने पीछे शत्रु जनजातियों को छोड़कर जाना गलत था. वे उसकी आपूर्ति को रोक सकती थीं. फिर उसने एक तेज़ अभियान में उन जनजातियों को शांत किया और अपनी यात्रा ज़ारी रखी.

उस नए देश में सेना को शहर नहीं मिले. वहां केवल छोटे गाँव और शासकों के महल थे. सिकंदर ने महसूस किया कि यदि व्यापार को प्रोत्साहित किया जाना था, तो वहां शहर होना आवश्यक थे. इसलिए उसने शहरों के निर्माण का आदेश दिया. उसने अपने प्रान्त के नाम पर प्रत्येक शहर का नाम अलेक्जेंड्रिया रखा.

अफ़गानिस्तान के अभियान में सिकंदर दक्षिण में दूर बहुत संकट में फंस गया. वापिस लौटने के लिए सिकंदर को अब हिंदूकुश के बर्फ से ढके पहाड़ों पर से गुज़ारना पड़ा. सेना को भोजन और ईंधन की कमी का सामना करना पड़ा. अक्सर सैनिक खच्चरों के मरे मांस पर ज़िंदा रहे.
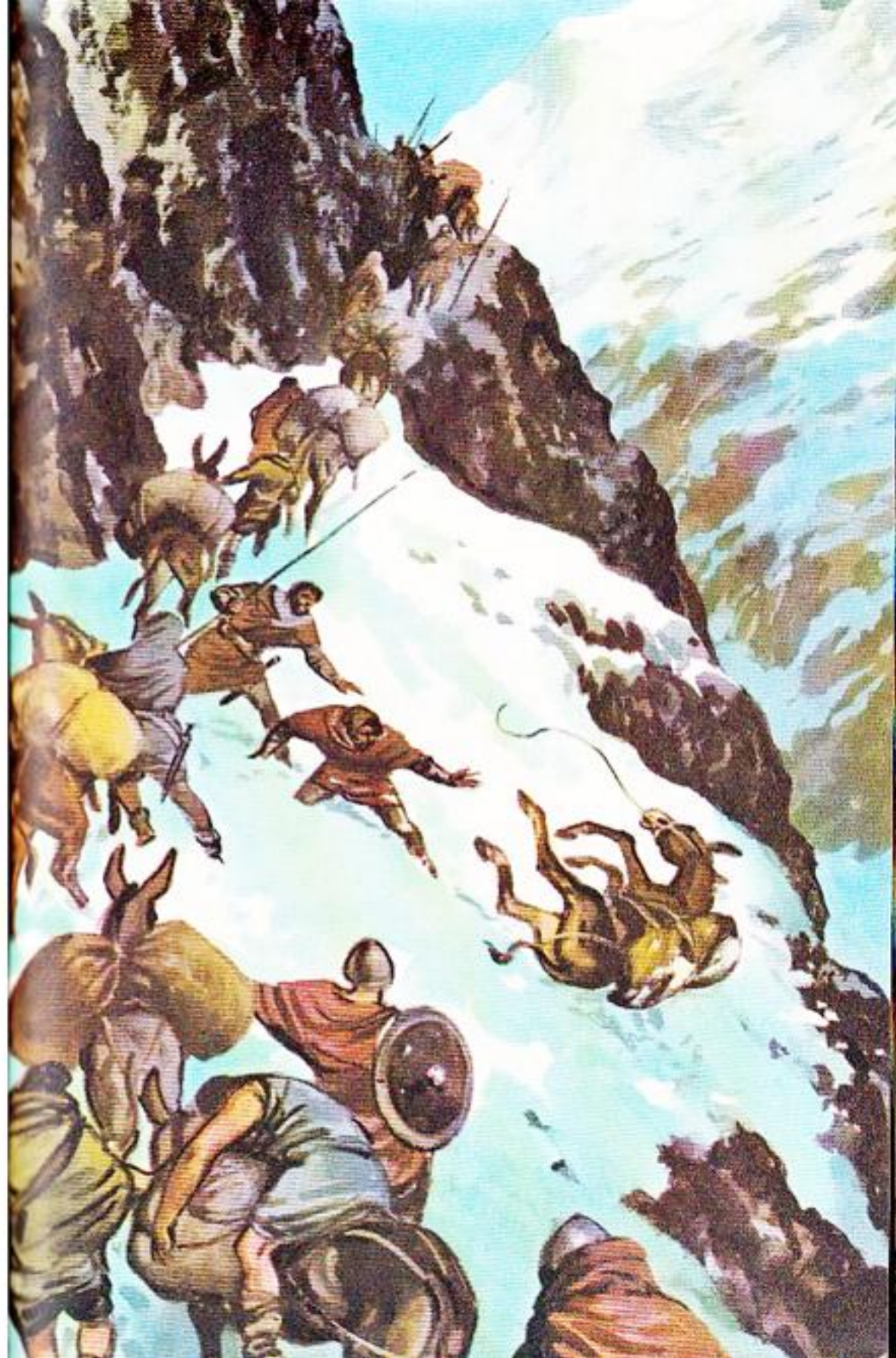
अभी कई और लड़ाईयां लड़ी जानी बाकी थीं. ऑक्सीआर्ट्स नामक एक शक्तिशाली राजकुमार ने पहाड़ों पर उत्तर की ओर एक सेना की कमान संभाली. उसका मुख्य गढ़ एक महान चट्टान पर था. उसने सिकंदर से मजाक में कहा कि वो तब तक कब्जा नहीं करे पायेगा जब तक उसके आदमी उड़ नहीं पाएंगे.

चट्टानों की दरारों में लोहे की खूंटे गाड़कर और रस्सी की सीढ़ी का उपयोग करके, हमलावर सैनिक चोटी पर पहुंचने में कामयाब रहे. रक्षक उन्हें देखकर इतने हैरान हुए कि उन्होंने तुरंत आत्मसमर्पण कर दिया.

ऑक्सीकार्ट बच गया, लेकिन जिन लोगों को पकड़ा गया, उनमें उसकी बेटी रोक्साना थी. जब उसे सिकंदर के सामने लाया गया तो उसने देखा कि वह बहुत सुंदर थी. फिर कुछ समय बाद बड़ी धूमधाम से उनकी शादी हो गई.

इसका ऑक्सीकार्ट्स पर वांछित प्रभाव पड़ा. जब उसे पता चला कि सिकंदर उसके साथ गठबंधन बनाने को तैयार है, तो उसने दूत भेजकर शांति की माँग की. सिकंदर को यह प्रस्ताव बहुत पसंद आया और तब से ऑक्सीकार्ट्स उसका वफादार सहयोगी बन गया. इसमें सिकंदर ने अपना विवेक दिखाया. उसे अपने महान गुरु अरस्तू की बात याद आई. उन्होंने कहा था कि युद्ध करने के बाद हमेशा शांति बहाल करना आवश्यक होता है. ऑक्सीकार्ट्स के साथ गठबंधन ने वो शांति हासिल की.
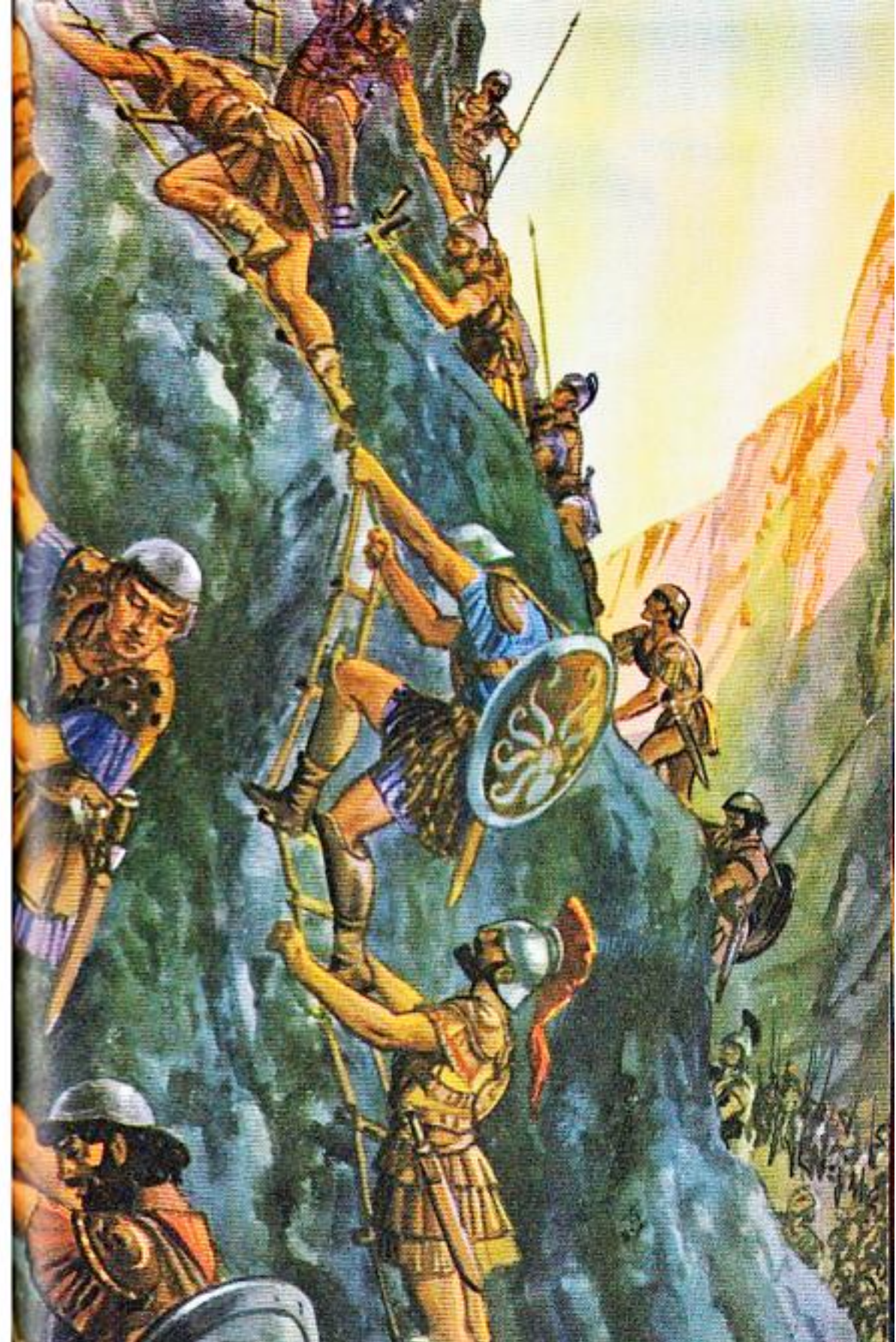
सिकंदर अब अफगानिस्तान के उत्तर में था. वो जंगली पहाड़ों का देश था, और वहां पूर्व में कई जनजातियाँ थीं जो अभी भी शत्रुतापूर्ण थीं.

गठबंधन के बाद अब उसके पास 30,000 पुरुषों की एक सेना थी जो आगे बढ़ने को तैयार थी. वे अज्ञात मार्च कर रहे थे, क्योंकि किसी को नहीं पता था कि पहाड़ों से परे क्या था. सिकंदर का मानना था कि पूर्व की ओर मार्च करके वह जल्द ही समुद्र तक पहुँच जाएगा. मानचित्र को देखने पर हमें सिकंदर की गलती मालूम पड़ेगी. पूर्व की ओर समुद्र तक पहुँचने के लिए उसकी सेना को चीन के ठीक सामने से गुजरना होगा.

सिकंदर ने पहले दक्षिण-पूर्व की ओर रुख किया, खैबर दर्रे से पहाड़ों को पार करने के लिए. इस नाम को दो हजार साल बाद ब्रिटिश सैनिकों ने जाना.

बहुत लड़ने के बाद सिकंदर सिंधु नदी तक पहुंचा. नदी के आगे पंजाब के समृद्ध देश और पोरस नामक एक शक्तिशाली राजकुमार था, जिसने दो सौ हाथियों के साथ एक बड़ी सेना की कमान संभाली थी. एक विस्तृत चक्कर लगाकर सिकंदर ने नदी पार की और पीछे से सफलतापूर्वक हमला किया. जब पोरस को उसके सामने लाया गया, तो सिकंदर ने उससे पूछा कि वो उसके साथ कैसा सलूक करे. "एक राजा की तरह," पोरस ने गर्व से उत्तर दिया. इस उत्तर से सिकंदर खुश हुआ और फिर पोरस और उसके बीच मित्रता हुई.
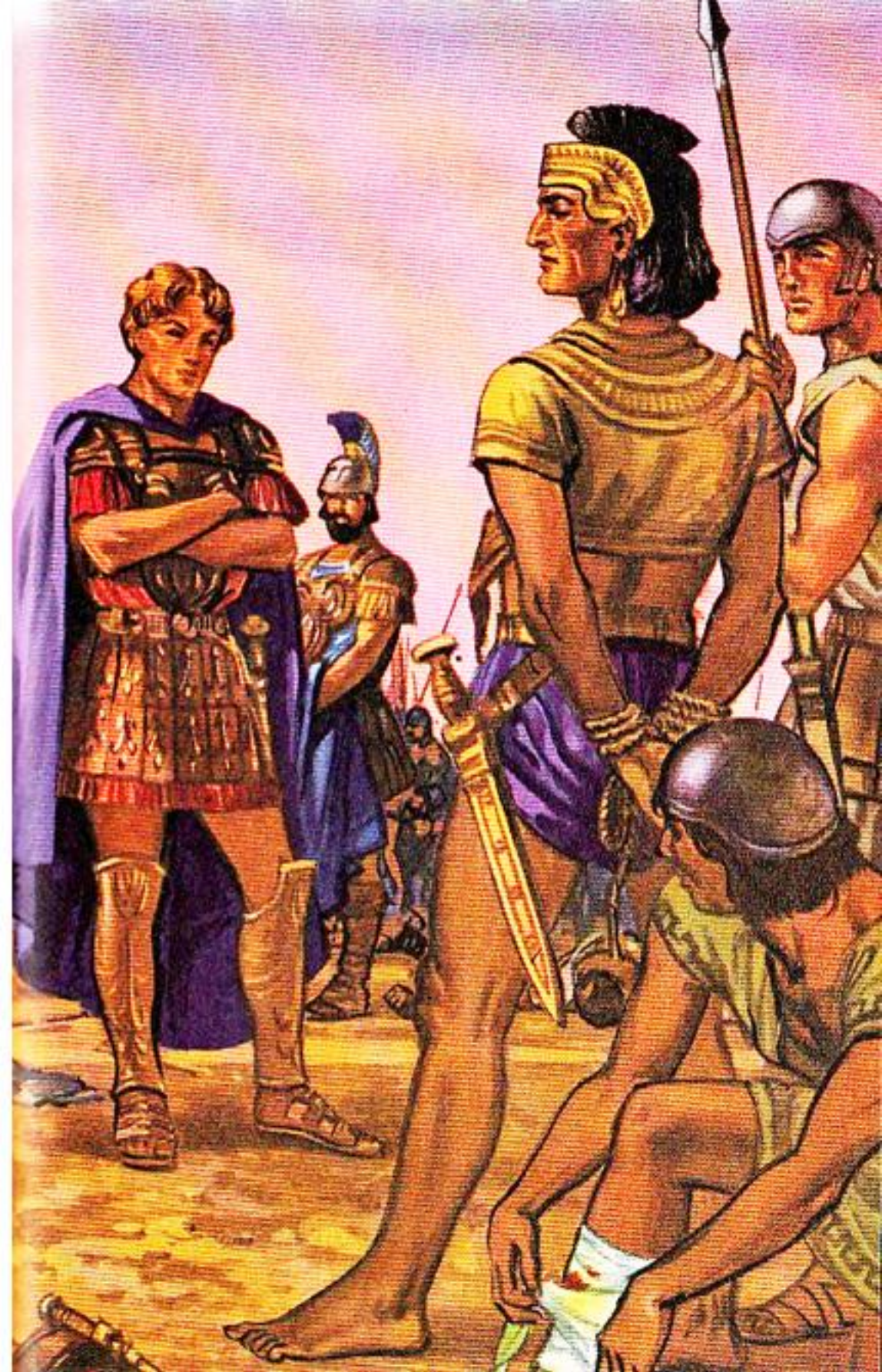
पोरस से दोस्ती के बाद, सिकंदर ने सैकड़ों हाथियों को अपनी सेना में शामिल किया. ये बहुत मूल्यवान थे क्योंकि यात्रा के दौरान वो कोई बड़ा सौदा कर सकते थे. लड़ाई में घोड़े, हाथियों का सामना करने में असमर्थ थे, और पैदल सैनिक उनके खिलाफ लगभग शक्तिहीन थे.

उस लड़ाई के बाद, जिसमें पोरस को हराया गया, सिकंदर ने दो शहरों की स्थापना की, दोनों का नाम अलेक्जेंड्रिया रखा गया: पहला, अलेक्जेंड्रिया नइका, जहां उसकी सेना को घेरा गया था, और दूसरा, अलेक्जेंड्रिया बूसफला.

दूसरे शहर से जुड़ी एक कहानी है जो हमें महान विजेता की प्रकृति का एक अलग पक्ष दिखाती है. वह हमेशा अपने सैनिकों के सिर पर सवार रहता था, और अक्सर युद्ध में उन्हें खूब लड़वाता था. उसके पास निश्चित रूप से सैकड़ों घोड़े थे, लेकिन उनमें से एक, जिसका नाम बाउसेफालस था, वह उसका पसंदीदा था.

ब्यूसेफालस ने मैसेडोनिया से पूरे रास्ते में सिकंदर को सैकड़ों मील दूर ले गया. अब घोड़े की मृत्यु हो गई थी, और सिकंदर एक दोस्त के रूप में उसके लिए दुखी था. उसने अपने प्रसिद्ध घोड़े की याद में एक शहर की स्थापना की बिल्कुल वहां, जहां घोड़े की मृत्यु हुई थी. उसने एक विशेष सिक्का भी बनवाया जिसमें वो खुद ब्यूसेफालस पर सवार होकर पोरस के हाथियों का पीछा कर रहा था.
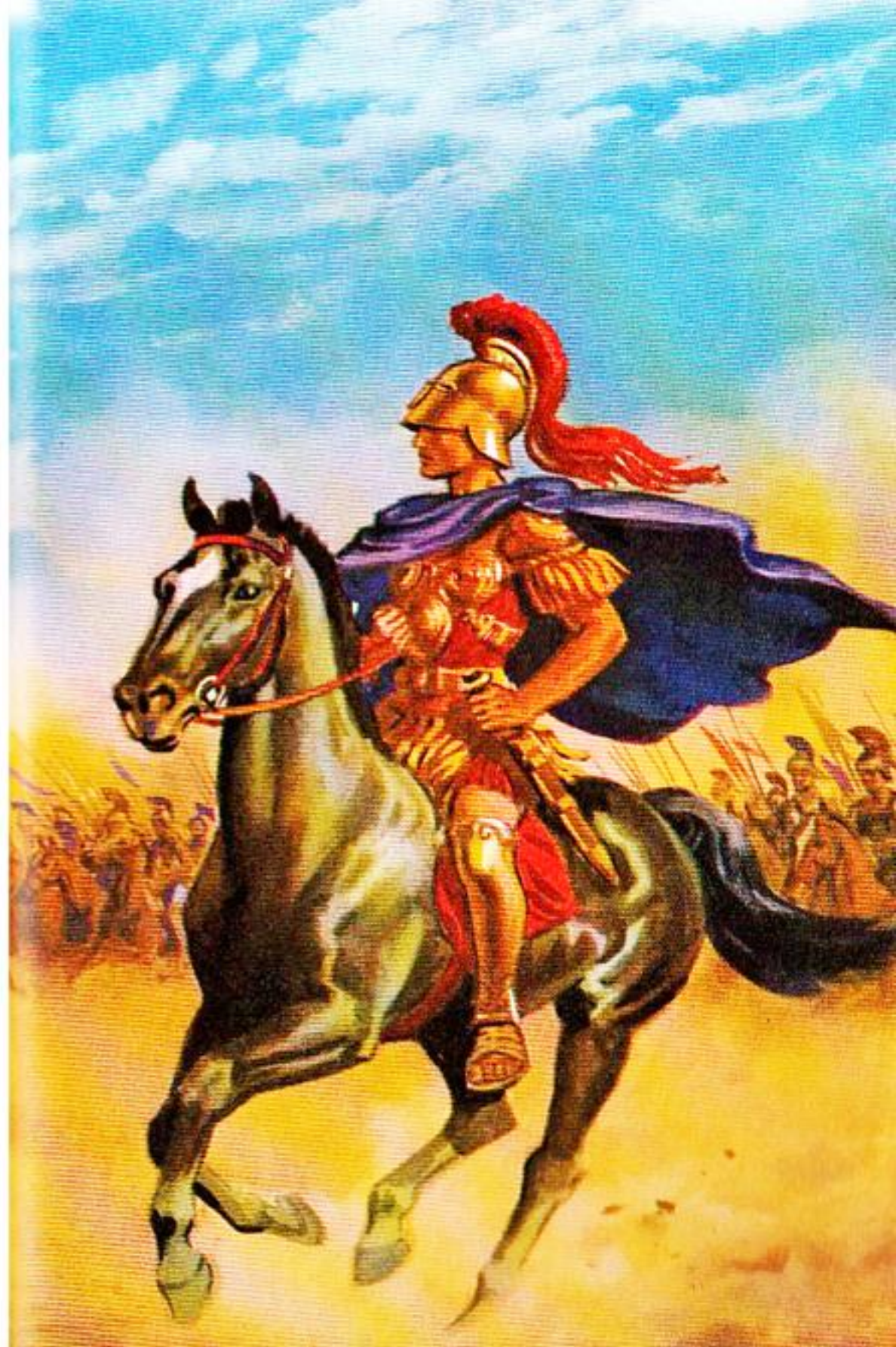
सिकंदर की पूर्व की ओर यात्रा जारी रही., सिकंदर अभी भी उम्मीद कर रहा था कि उसे अगली पहाड़ी से समुद्र दिखेगा.

सिकंदर की उम्मीदों को उसके सैनिकों ने साझा नहीं किया. वे अब सिर्फ उत्तर में थे, बिल्कुल अमृतसर के पास. वे ग्रीस में अपने वतन से हजारों मील दूर थे. आठ साल से अधिक समय हो गया था जब उन्होंने डारडेल्स होकर एशिया में कदम रखा था.

पंजाब में लड़ाई भारी थी, और उसमें कई लोग मारे गए थे और घायल हुए. जो बचे थे वे अचरज कर रहे थे कि उनमें से कितने लोग कभी अपने घरों को फिर से देखेंगे. बहुत से दुश्मन पूर्व में उनका इंतजार कर रहे थे. उन्होंने सुना था कि अगली नदी के पार एक जनजाति थी जिसके पास हजारों बहुत बड़े और भयंकर हाथी थे.

फिर सेना ने बगावत कर दी. जिन सैनिकों ने सिकंदर की इतनी ईमानदारी से सेवा की थी और जो इतनी बहादुरी से लड़े थे, उन्होंने आगे जाने से इनकार कर दिया. यह सिकंदर के लिए एक बड़ा झटका था. वह तीन दिनों के लिए वो अपने तम्बू में लेटा रहा, इस उम्मीद में कि सैनिक अपना मन बदल लेंगे. जब वे नहीं आए, तो उसने उनसे वादा किया कि वे अब घर जाने के लिए रवाना होंगे. सैनिकों ने खुशी जताई. उन्हें यह नहीं पता था कि सबसे बुरा समय अभी तक नहीं आया था.
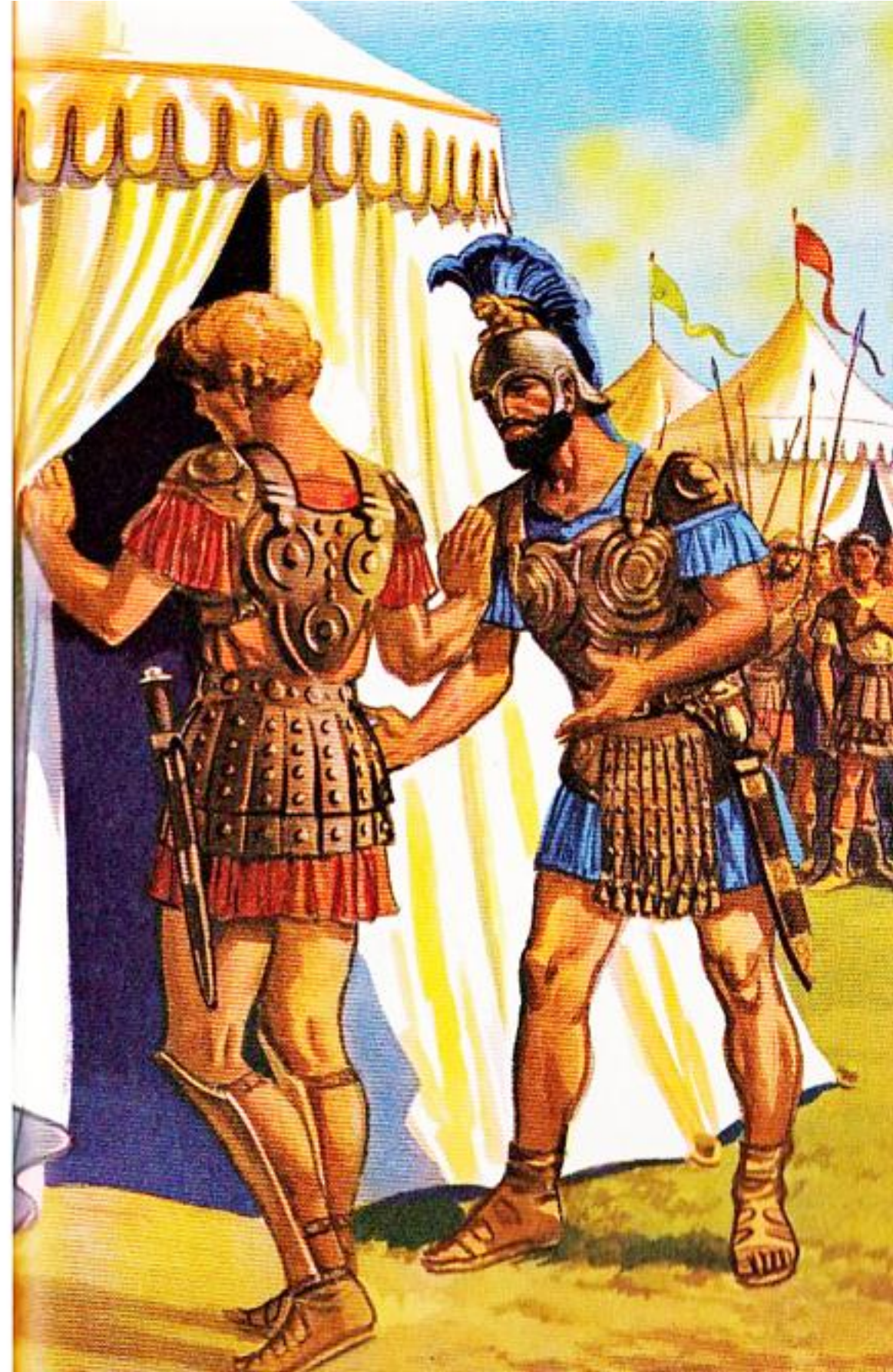
शुरू में तो वापसी का सफर आसान रहा. सिकंदर ने समुद्र आने तक झेलम नदी के रास्ते चलने का फैसला किया, और उसने लगभग एक हजार जहाजों का निर्माण करवाया. कई सैनिक जहाजों में रवाना हुए; दूसरों ने घोड़ों और हाथियों के साथ नदी के किनारे-किनारे मार्च किया.

जल्द ही झेलम एक अन्य नदी में शामिल हो गई, और यहां सैनिकों ने पाया कि उनकी लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई थी. वहां लड़ाई कठिन थी. एक के बाद एक शहर पर हमले द्वारा कब्ज़ा किया जाना था, और दो बार सिकंदर पहले दीवार चढ़ा ताकि उसके थके हुए और निराश सैनिक उसके पीछे आने को प्रोत्साहित हों.

दूसरे अवसर पर उसके सबसे अच्छे सैनिक भी आगे नहीं बढे. फिर सिकंदर ने एक सीढ़ी को पकड़ा और खुद दीवार पर चढ़ा. उसके साथ केवल उसकी ढाल वाला और लियोनाटस नाम का एक अधिकारी था. सिकंदर ने दीवार से शहर में छलांग लगाईं और तब तक अकेला लड़ता रहा जब तक कि बाकी दो साथी उसके साथ आकर नहीं मिले.

ऐसा करने में वह घायल हो गया. पेयूकेस्टस ने उसकी अपनी ढाल से रक्षा की और लियोनसस दुश्मन से लड़ता रहा. अंत में उसकी सेना ने शहर में प्रवेश किया और फिर सिकंदर को बेहोश हालत में एक जहाज़ पर ले जाया गया.
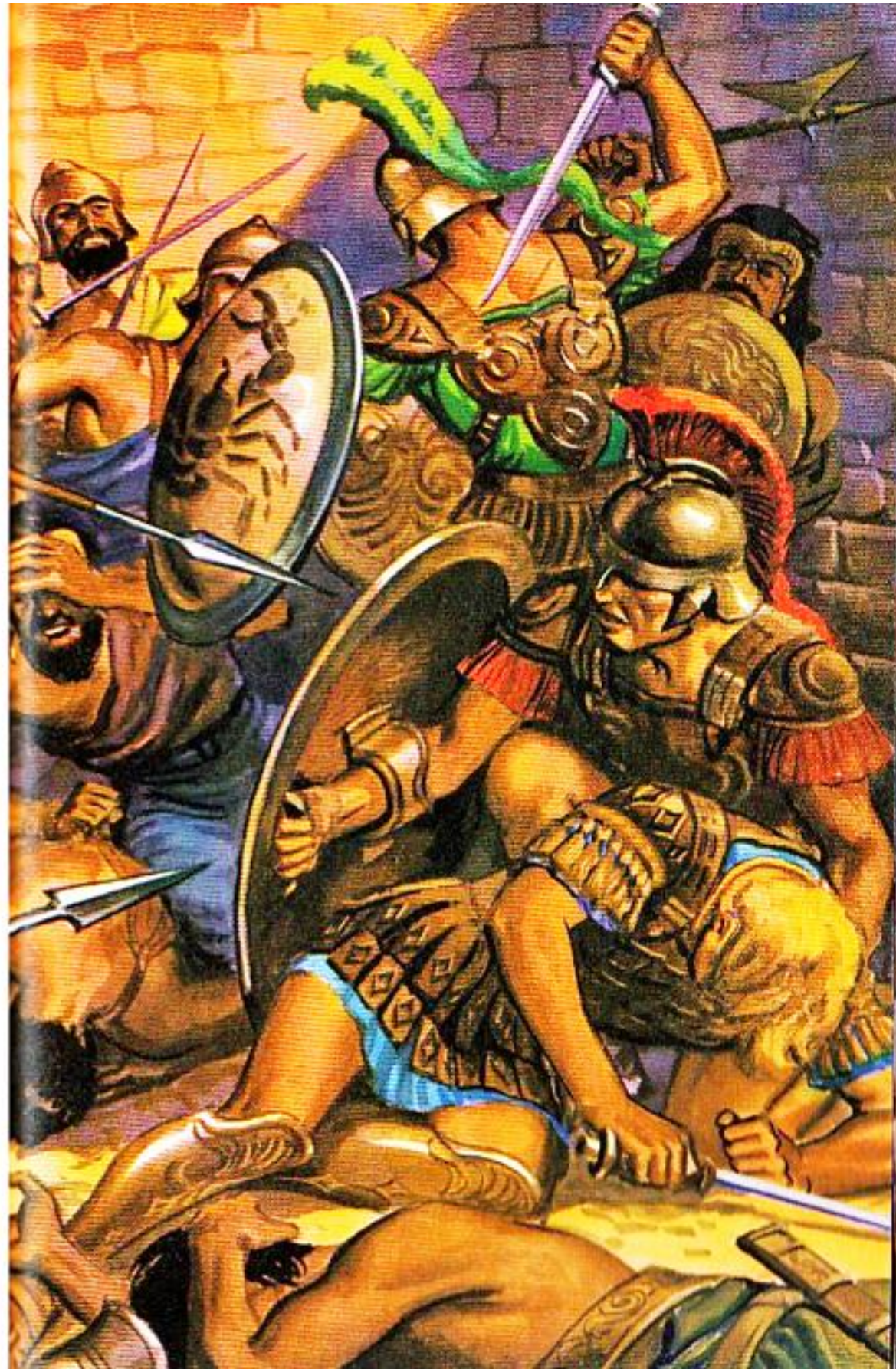
एशिया भर में हजारों मील के अपनी लंबे मार्च के दौरान, सिकंदर ने हमेशा अरस्तू के शिक्षण को याद रखा. युद्ध में एक साम्राज्य जीता जा सकता था, लेकिन केवल व्यापार ही साम्राज्य को बहाल रख सकता था.

इसलिए सिकंदर जहां भी गया, वो व्यापारियों से मिला और उसने उनसे बात की. वो हमेशा यह जानने के लिए उत्सुक रहता था कि व्यापारी पूर्व के शोर-शराबे वाले रंगीन बाजारों में क्या बेचना चाहते थे. पुराने व्यापार मार्ग - जहाँ से बाद में मार्को पोलो ने यात्रा की - और नदियों से मिलने वाली नहरों सभी का सावधानीपूर्वक रिकॉर्ड रखा गया.

सिकंदर मुक्त और खुले व्यापर का समर्थक था. वो चाहता था की स्वतंत्र रूप से पूर्व और पश्चिम के बीच व्यापार, माल का आना-जाना चलता रहे. वो चाहता था उसके द्वारा बनाये नए शहर महान बाजार बनें - जहाँ व्यापारी दुनिया भर से अपना माल लाएं और बेंचें.

जिससे सभी व्यापारी पूरे विश्व में व्यापार कर सकें सिकंदर ने ऐसे सिक्के चलाये जो हर जगह स्वीकार किये जाते थे. बेबीलोन ही मात्र ऐसा देश था जिसे अपने करेंसी छापने की छूट थी. दुर्भाग्य से सिकंदर की मृत्यु के बाद सभी देशों ने दुबारा अपने-अपने सिक्के ढालना शुरू किये. अगर सारे देश एक ही करेंसी का उपयोग करते तो शायद उससे उनका व्यापार बहुत बढ़ता.
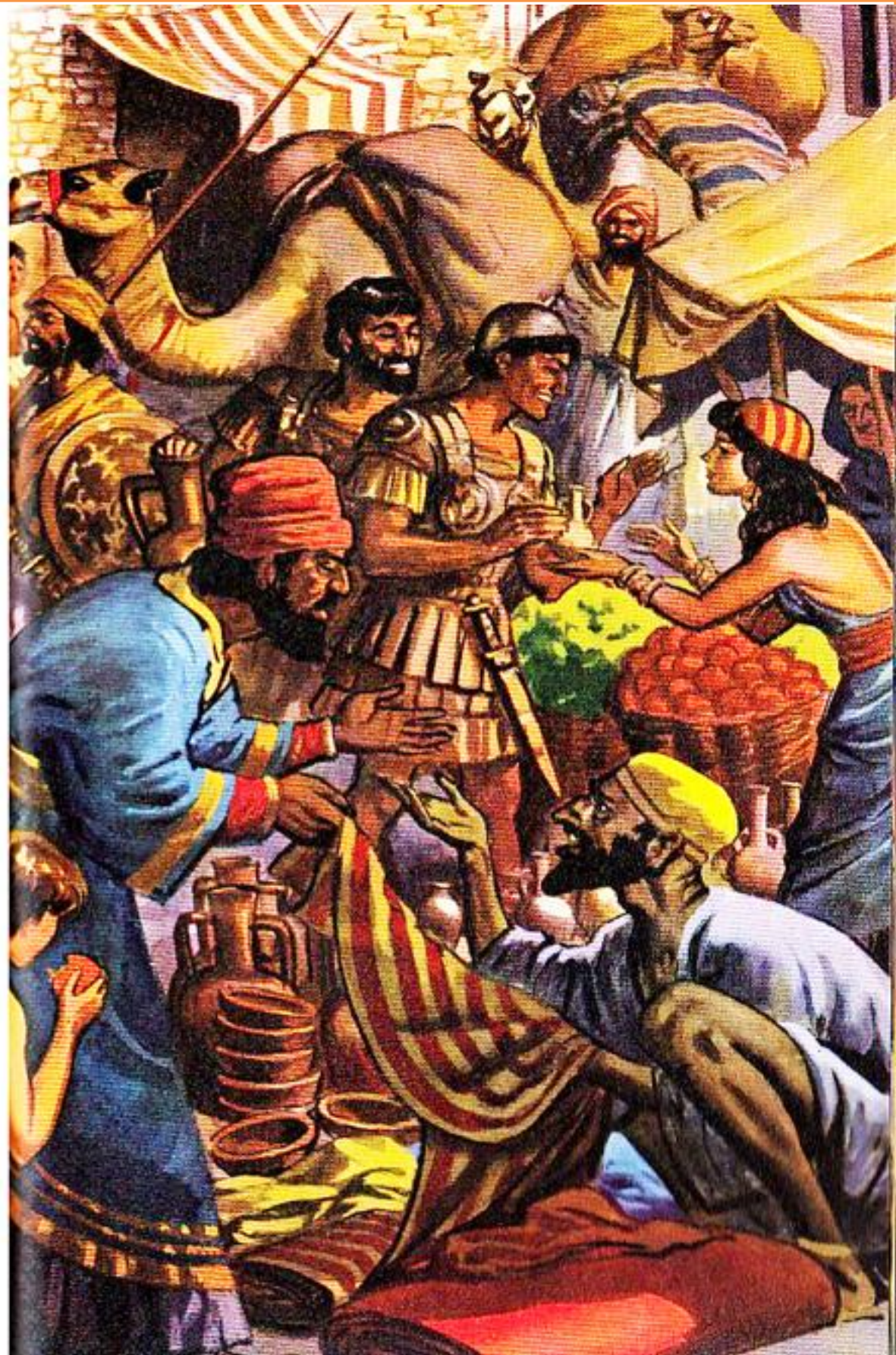
फिर सिकंदर नदी से होते हुए पाताल नामक स्थान पर पहुंचा. वो स्थान समुद्र से दूर नहीं था. यहां उसने एक महान बंदरगाह का निर्माण करवाना शुरू किया, जहाँ पर दूसरे देशों से जहाज, बाजारों की आपूर्ति के लिए आ-जा सकते थे. वो अभी भी एक महान व्यापारिक साम्राज्य की स्थापना का सपना देख रहा था.

उसके एक सेनापति ने घर की ओर पश्चिम दिशा में मार्च करना शुरू कर दिया था. वह अपने साथ भारी सामान, सभी बीमार और घायल सैनिकों, और साथ में सभी हाथियों को ले गया. बाद में उसे मुख्य सेना के साथ जुड़ना था.

सिकंदर अब अरब सागर में कराची के पास पहुंचा. वो एक अद्भुत क्षण था जब पहली बार उसने और उसके सैनिकों ने एक नए महासागर को देखा. सिकंदर पूर्व में समुद्र तक नहीं पहुंचा था, लेकिन उसने दक्षिण में एक नया महासागर खोज निकाला था.

यूनानियों के प्राचीन धर्म के अनुसार, अब देवताओं के लिए बलिदान चढ़ाने का समय था. सिकंदर ने शराब, पानी में उंडेली, और फिर लहरों के ऊपर अपने सुनहरे कटोरे को बहाया. उसने प्रार्थना की कि समुद्र और हवा के देवता उसके जहाजों को सुरक्षित रूप से बंदरगाह तक पहुंचाएं. उसके बाद वहां से जहाज रवाना हुए.
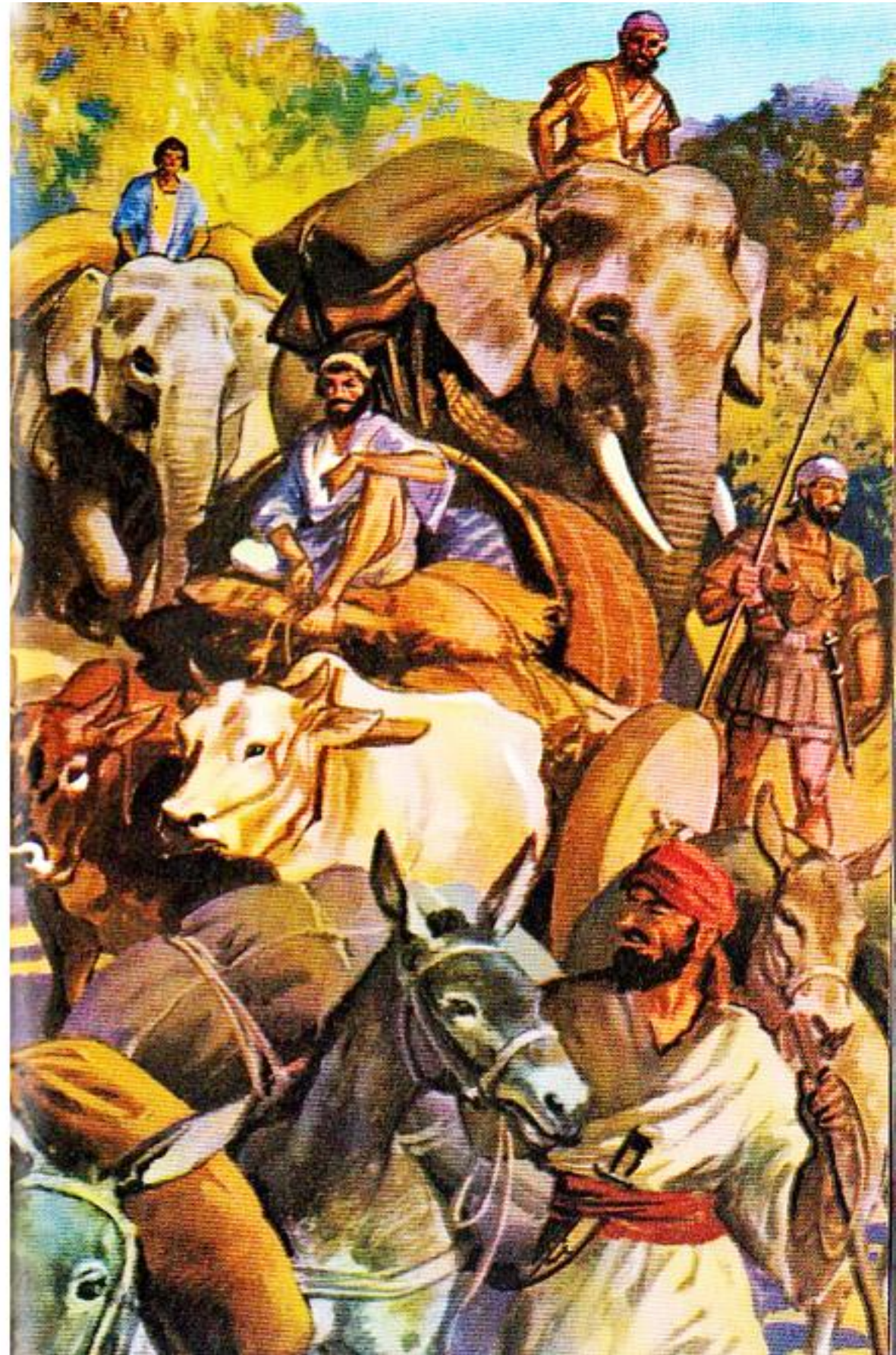
लगभग तीन हजार लोग जहाजों में भरकर फारस की खाड़ी की ओर रवाना हुए. बाकी सेना के साथ सिकंदर ने अब इतिहास के सबसे भयानक मार्चों में से एक शुरुआत की.

उसका इरादा तट के करीब चलने और जहाजों से संपर्क बनाये रखने का था. चूंकि जहाज़ों में इतने लोगों के लिए भोजन और पानी ले जाना संभव नहीं था, इसलिए उन्हें समय-समय पर सेना सामान सप्लाई करती थी.

सौ मील तक तो सब ठीक रहा, फिर सिकंदर ने अचानक पाया कि तट के रास्ते पहाड़ों की एक श्रृंखला के कारण वो अब आगे नहीं बढ़ सकता था. अब वो बहुत लम्बे रास्ते से जाने को बाध्य था, और वो एक जंगली, अज्ञात देश था. उसने कुछ मूल निवासियों को गाइड के रूप में लिया. दुर्भाग्य से जब वे तट से दूर हो गए, तो गाइड्स को भी उस देश के बारे में कुछ नहीं पता था.

सेना, पानी या भोजन के अभाव में जंगली रेगिस्तान में पूरी तरह से खो गई. दिन में इतनी गर्मी थी कि वे सिर्फ रात को ही मार्च कर सकते थे. दो सौ मील तक वे साथ-साथ जूझते रहे, संघर्ष करते रहे. वे अपने जानवरों को खाकर ज़िंदा रहे और जलाऊ लकड़ी के लिए वैगन जलाते रहे. उन्हें बीमार पड़ गए लोगों को पीछे छोड़ना पड़ा, और सैकड़ों लोगों ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया.
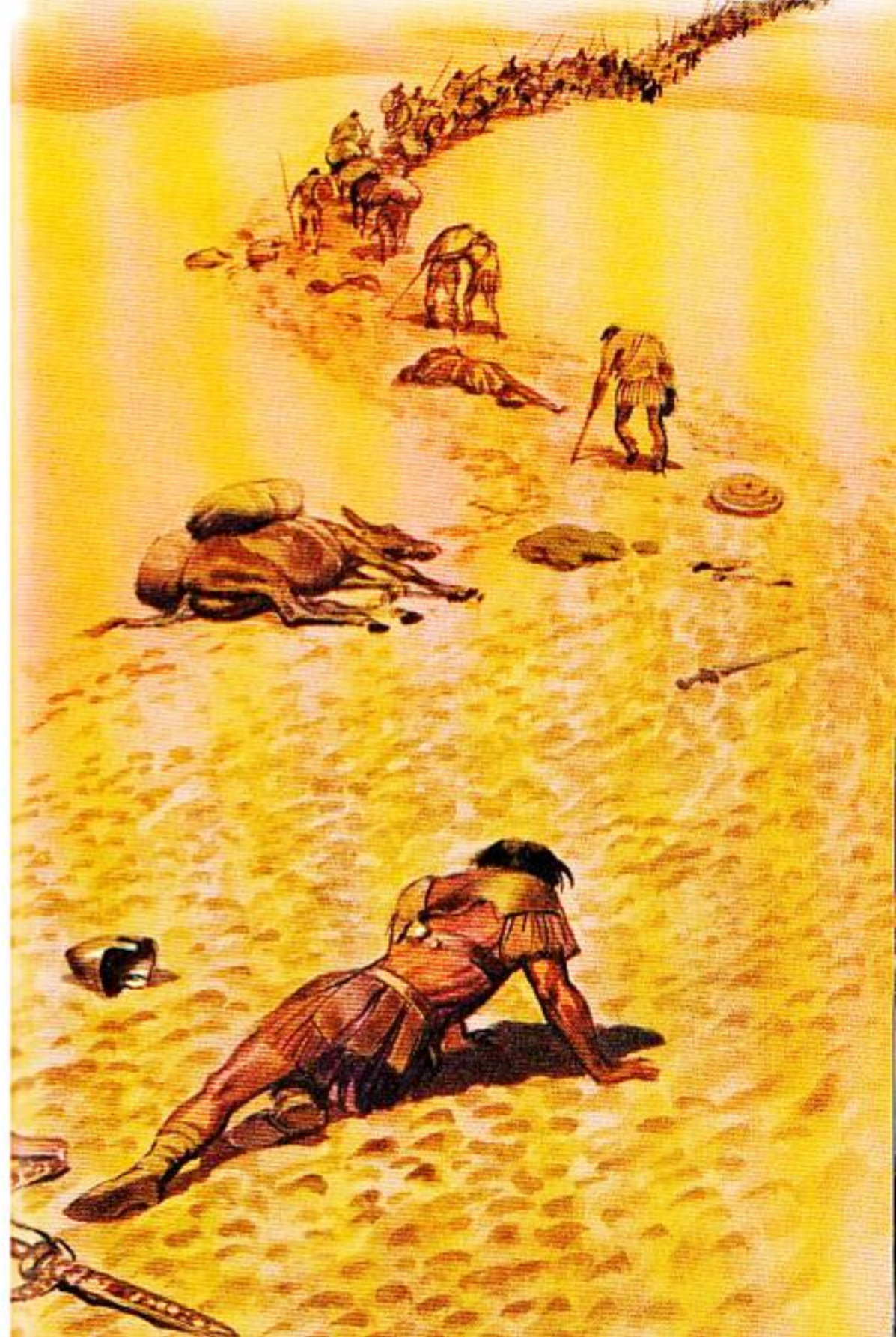
अंत में वे फिर से तट पर पहुंचे. सिकंदर अपने आदमियों को शांत रखने में सक्षम रहा, लेकिन जहाजों का कोई अतापता नहीं था. वे फिर रवाना हुए थे, और चार सौ मील की दूरी तय करने के बाद ही वे फिर से एक साथ आए.

नाविकों को कई रोमांचक अनुभव हुए. इनमें से एक - व्हेल के स्कूल के साथ उनकी मुठभेड़ थी. उन्होंने पहले कभी व्हेल नहीं देखी थीं. उन्होंने सोचा कि वे शत्रु के जहाज थे. इसलिए वे उनसे लड़ने के लिए तैयार हो गए. युद्ध की तैयारी के लिए उन्होंने तुरहियां बजायीं पर जब दुश्मन के जहाज अचानक डूबकर गायब हो गए तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ.

फिर से बेड़ा और सेना अलग-अलग हो गए. जहाज फारस की खाड़ी में रवाना हुए, और सेना ने पर्सेपोलिस के रास्ते से मार्च किया, जिस पर उन्होंने कभी पहले कब्जा किया था.

फारस की खाड़ी के पास अहवाज़ नाम की जगह पर, वे फिर से मिले. तब एक महान दावत आयोजित की गई. इस दावत में सिकंदर ने अपने अस्सी सेनापतियों और दस हज़ार सैनिकों को फ़ारसी महिलाओं से शादी करने का आदेश दिया. इससे दो देशों के लोगों के बीच मेल बढ़ा.
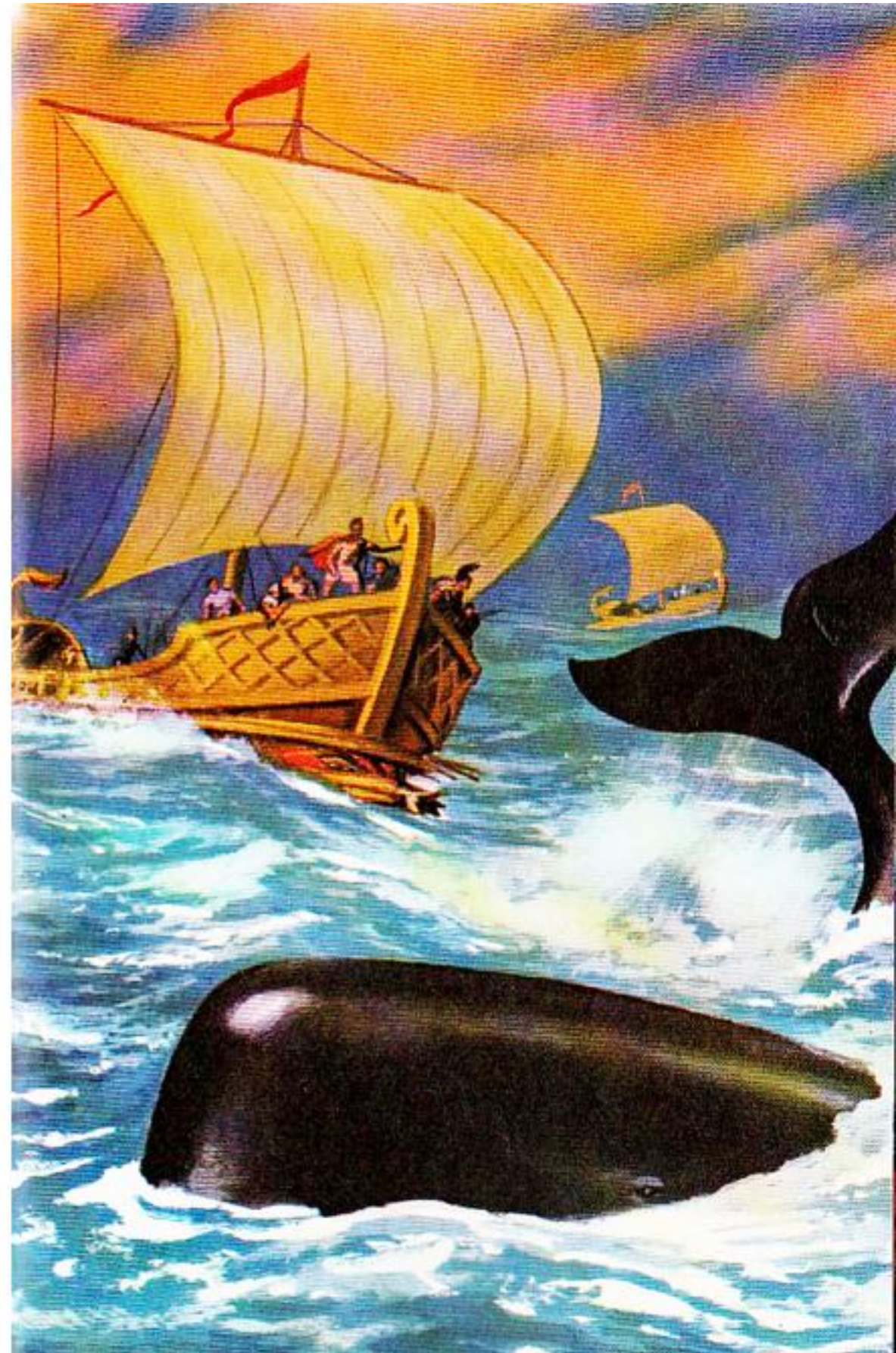
सिकंदर की एक महान महत्वाकांक्षा थी. वो अपने साम्राज्य में विभिन्न नस्लों के लोगों को एकजुट करना चाहता था. उसने अब पूरी ज्ञात दुनिया पर विजय प्राप्त कर ली थी. अब वो कई छोटे और बड़े देशों, जो आपस में प्रतिस्पर्धा और लड़ाई करते थे के स्थान पर एक विश्व राज्य बनाने की कोशिश कर रहा था.

यह एक शानदार डिजाइन था, लेकिन दुर्भाग्य से सिकंदर इसे हासिल करने में सफल नहीं हुआ. जिन तरीकों से उसने ऐसा करने की कोशिश की उनमें से एक ने उसके यूनानी सैनिकों को बहुत नाराज किया. जब उसने कुछ यूनानी रेजिमेंटों को हटाकर उनकी जगह फारसियों को भर्ती किया तो उन्होंने आपत्ति जताई. सिकंदर को एक और बगावत का सामना करना पड़ा.

उन्होंने असंतुष्ट सैनिकों को एक साथ इकट्ठा किया और उनसे कहा : "कि जो लोग जाना चाहते हैं, वे घर जाएं. तुम में से हरेक घर जाओ," उसने कहा, "और उन्हें बताओ कि तुम अपने राजा को छोड़कर आये हो, उस राजा को जिसने तुम्हें दुनिया भर में जीत दिलाकर आगे बढ़ाया था."

यह सुनकर विद्रोही सैनिकों ने पश्चाताप किया. फिर से शांति के समापन का जश्न मनाने के लिए एक महान दावत का आयोजन किया गया. भोज में नौ हजार मेहमान - यूनानी, मेसीडोनियन और फारसी, राजा की मेज पर एक साथ बैठे थे. उन्होंने तुरही बजाई, और देवताओं को मदिरा का प्रसाद चढ़ाया.
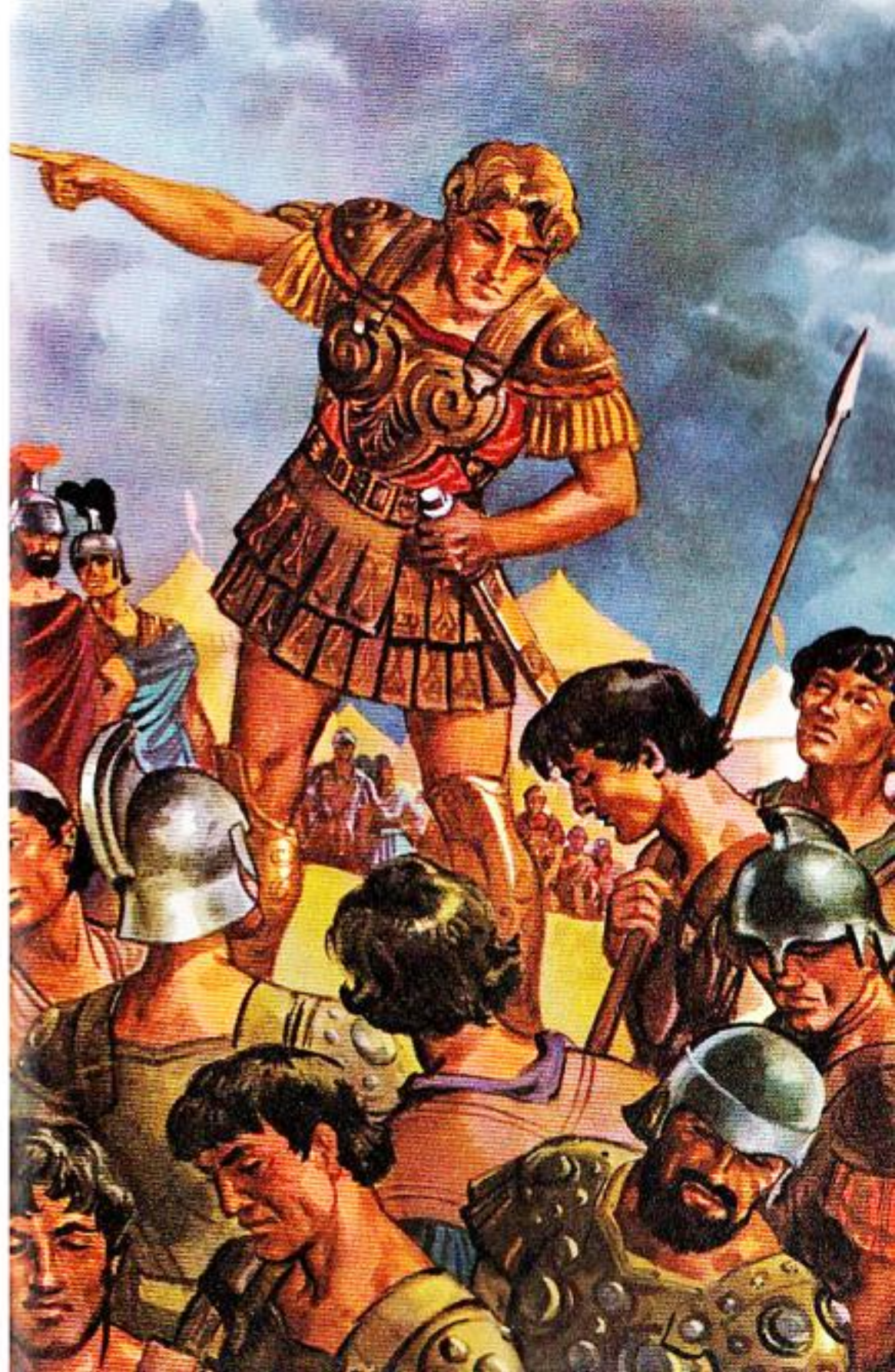
इस भोज में सिकंदर ने एक शानदार भाषण दिया, जिसमें उसने प्रार्थना की कि दुनिया के सभी लोग खुशी और शांति के साथ जी सकें. पिछले दो हज़ार वर्षों से, दुनिया के राजनेता इस सपने को साकार करने की असफल कोशिश कर रहे हैं.

सिकंदर सफल होता या नहीं यह हमें नहीं पता. आगे कार्य करने के लिए वो लंबे समय तक नहीं जी पाया. एक साल के अंदर ही उसका देहांत हो गया.

बेबीलोन में सिकंदर ने एक अन्य महान अभियान की तैयारी की. यह अभियान शांति के लिए था. उसने एक महान बंदरगाह की खुदाई और एक हजार जहाजों का निर्माण करवाया. इनके द्वारा वो बेबीलोन से मिस्र के बीच समुद्री मार्ग खोजने की कोशिश करने के साथ-साथ सभी तटवर्ती अरब देशों का विस्तार से पता लगाना चाहता था.

बेड़े के तैरने की तय तारीख से तीन दिन पहले, सिकंदर बीमार पड़ गया. संभव है कि कि किसी ने उसे जहर दिया हो. सिकंदर के शिविर में कई फारसी लोग थे जो मित्र होने का नाटक करते थे, लेकिन जिन्हें अपने देश की हार के कारण सिकंदर से घृणा थी. सिकंदर तेजी से कमजोर हुआ फिर भी उसने अभियान की तैयारियों को जारी रखा. पर अब बहुत देर हो चुकी थी. बत्तीस वर्ष की आयु में, वह अपनी मातृभूमि से बहुत दूर मर गया. वो एक महान साम्राज्य का राजा था जिस पर उसने कभी शासन नहीं किया.

समाप्त

ALEXANDER'S CAMPAIGN
ROUTE OF ALEXANDER
ROUTES TAKEN BY HIS GENERALS
MACEDONIA
THRACE
BLACK SEA
Pella
Athens
Gordium
Budrum
Tarsus
Issus
PERSIAN EMPIRE
MEDITERRANEAN SEA
Alexandria
Tyre
Damascus
Siwa (Oasis)
EGYPT
ARABIA
R. Tigris
R. Euphrates
Ecbatana
Babylon
BABYLONIA
CASPIAN SEA
ARAL SEA
PARTHIA
Persepolis
CARMANIA
PERSIAN GULF
SOGDIANA
BACTRIA
R. Murghab
AFGHANISTAN
DRANGIANA
HINDU KUSH
KHYBER PASS
R. Jhelum
R. Indus
INDIA
Patala
Karachi
ARABIAN SEA